उड़ान

जुलाई-2021

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका

नालको NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक 'नवरत्न' लोक उद्यम)
निगम एवं पंजीकृत कार्यालय
पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013

संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिल्ली कार्यालय का निरीक्षण मंत्रालय व कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा संतोष-जनक प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए संपन्न।

नराकास (उ) भुवनेश्वर की छमाही बैठक में सदस्य कार्यालयों को ऑनलाइन संबोधित करते हुए माननीय अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष।

विश्व हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त विजेता श्री विद्या को पुरस्कृत करते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय श्री श्रीधर पात्र।

विश्व हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर **अक्षर** के **जनवरी 2021** अंक का विमोचन।

अक्षर

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका
जुलाई-2021

मुख्य संरक्षक
श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन)
श्री एम.पी. मिश्र, निदेशक (परियोजना एवं तकनीकी) एवं निदेशक (वित्त)- अतिरिक्त प्रभार
श्री बी. के. दास, निदेशक (उत्पादन) एवं निदेशक (वाणिज्यिक)- अतिरिक्त प्रभार
श्री सोमनाथ हंसदा, मुख्य सतर्कता अधिकारी

सलाहकार
श्री जावेद रेयाज़, समूह महाप्रबंधक (औ.अ. एवं अनुपालन)

संपादक
श्री रोशन पाण्डेय, उप प्रबंधक (राजभाषा)

सह-संपादक
श्री हिमांशु राय, उप प्रबंधक (राजभाषा), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर
श्री पवन कुमार त्रिपाठी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), अनुगुळ
डॉ. धीरज कुमार मिश्र, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी

सीमित वितरण हेतु

पत्रिका में छपने वाले विचार लेखक/कवि के निजी हैं, इनसे संस्था या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

नालको NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक नवरत्न लोक उद्यम)
निगम एवं पंजीकृत कार्यालय
पी/1, नयापल्ली,भुवनेश्वर-751013
वेबसाईट : http://www.nalcoindia.com
ईमेल: javed.reyaz@nalcoindia.co.in

विषय-सूची

नालको हेतु एल्यूमिनियम के अतिरिक्त अन्य सम्भाव्य क्षेत्र	चिरन्तन श्याम	06
पेपरलेस ऑफिस कैसे बनाया जा सकता है? इसमें ई-ऑफिस कैसे सहायक है?	प्रमोद कुमार त्रिपाठी	09
प्रचालन विभाग (बिजली घर): कार्य एवं उत्पादन रेखा में योगदान	अखिल कुमार	11
कंपनी में कर्मचारी: उत्साह से विकास की ओर	शिवम मिश्र	14
नालको के बढ़ते कदम और अपार संभावनाएँ	अंजन कुमार महतो	16
जीवन और समुदायों को बदलने के लिए प्रतिबद्धः निगम सामाजिक उत्तरदायित्व	राजश्री मिश्र	18
इंटरनेट का महत्व	रोशनी कुमारी	21
नालको: एक आदर्श परिवार	अमृता बसु	22
अकेला	सदाशिव सामन्तराय	23
योग-विज्ञान	कामना सिंह	25
नदी की धार...	शगुफ़्ता जबीं	27
मन करता है!	प्रियदर्शिनी सामंतराय	28
संयुक्त परिवारःसुखी परिवार	रंजिता नायक	29
कागजी बाँध	स्वाती तिवारी	31
वो सुबह..	आयशा अहद	32
रथ यात्रा का पर्व	गौतम सिंह	33
इंसान के रूप में भगवान	बर्नाली अधिकारी	34
हमारा परिवार-हमारी ताकत	अनुराधा वी.	35
मुझे मिला वही जो मेरा था!	सुनील कुमार	36
आप कहाँ से हैं?	धीरज कुमार मिश्र	37

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

बीते समय से सीखकर वर्तमान में भविष्य की तैयारी करना ही मानव विवेक का परिचायक है। यही दूरदर्शिता है, जो हमारे जीवन को प्रगतिशील और सहज बनाने में सहायक होती है।

हमारा जीवन हमारे निर्णय का सार भी है और प्रसार भी!

नए वित्त वर्ष के साथ हमने सकारात्मक एवं प्रभावी आगाज़ किया है। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी हम अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे और नतीजा हमारे पक्ष में रहा। हमने पिछले वर्ष की अपेक्षा 840% की बढ़ते के साथ ₹1300 करोड़ का शुद्ध लाभ हासिल किया। हम सभी के सामूहिक प्रयास और साझेदारी से ही यह उपलब्धि हासिल हुई है। यह उपलब्धि प्रत्येक कर्मचारी के योगदान को रेखांकित करती है। इस बीच हमने यह भी अनुभव किया है कि, हम अपने जीवन में नए आदतों के साथ चल रहे हैं। वे आदतें जिसने हमें एक-दूसरे से दूर रहकर, एक-दूसरे के लिए जीना सिखाया है। आने वाली चुनौतियों को परखते हुए यह हम सभी के लिए जरूरी हो गया है कि हम इन नई आदतों (अच्छाइयों) के साथ कार्य करें। सामाजिक दूरी का पालन करें, मास्क पहनें और सबसे ज्यादा जरूरी कि टीका लेकर, टीका-करण अभियान में अपनी भूमिका और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूरा करें।

साथियों मैं अपने सभी सहकर्मियों के प्रति संवेदित हूँ, जो इस विकट महामारी के शिकार हुए और उन्हें अपने प्रियजनों का दुःख भी सहन करना पड़ा। पर साथ ही, मुझे इस बात का भी गर्व है कि, हम सभी एक ऐसी संस्था से जुड़े हैं, जिसमें सभी संस्था के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं। इस समर्पण की ही देन है कि वर्ष 2020-21 के दौरान नालको ने 73.65 लाख टन के साथ अबतक का सर्वाधिक बॉक्साइट उत्पादन हासिल किया था। इसी क्रम में, कंपनी ने 2020-21 में 1.92 लाख टन के साथ अबतक के सर्वाधिक एल्यूमिनियम धातु का निर्यात हासिल करते हुए 2009-10 के दशक पुराने 1.46 लाख टन रिकॉर्ड उपलब्धि को पार किया। साथ ही कंपनी ने 20.85 लाख टन के एल्यूमिना हाइट्रेट और 4.18 लाख टन के एल्यूमिनियन धातु का उत्पादन भी हासिल किया है।

अपने सभी दायित्वों के प्रति पूरी जिम्मेवारी से कार्य करते हुए हम समाज, व्यवस्था, परिवेश, राज्य और देश के प्रति भी जागरूक रहकर समर्पित रहे। हमने यह प्रयास किया कि, किसी भी परिस्थिति में कंपनी की कार्य-क्षमता सकारात्मक बनी रहे, कंपनी अपनी उत्पादन क्षमता के अनुरूप अधिकतम प्रदर्शन करे। इस कोशिश में टीका-करण की सफलता एवं आम-जन के स्वास्थ्य की देख-भाल को सुनिश्चित करने के लिए राज्य के विभिन्न स्थानों तक टीका का परिवहन हो सके इसलिए कंपनी की तरफ से राज्य टीकाकरण प्रकोष्ठ, ओड़िशा सरकार को विशिष्ट वातानुकुलित ट्रक सौंपा गया जो 25,70,000 कोविड टीका (खुराक में) के परिवहन की क्षमता से युक्त है। साथ ही, शहीद लक्ष्मण नाएक मेडिकल कॉलेज, कोरापुट में 70 बिस्तरों वाले कोविड सेंटर और बानरपाल, अनुगुळ के ईएसआई अस्पताल में 66 बिस्तरों वाले कोविड स्वास्थ्य देखभाल सुविधा के देख-रेख तथा परिचालन व्यय को उठाते हुए सहयोग प्रदान किया गया। इस क्रम में, नबरंगपुर में खोले गए 200 बिस्तरों के विशिष्ट कोविड अस्पताल की सेवा आज भी जारी है और दामनजोड़ी, अनुगुळ और भुवनेश्वर में भी कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों के लिए कोविड देख-भाल केंद्र की सुविधा प्रदान की जा रही है।

सकारात्मक इरादे के साथ किसी भी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। इस उद्देश्य के साथ हमने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति भी नए उपलब्धियों को हासिल किया है। यह भी हम सभी की साझा जवाबदेही है कि, हम भारत सरकार के वार्षिक लक्ष्य के अनुरूप अपने कार्य में राजभाषा का प्रयोग करें। आप सभी की जानकारी के लिए इस अंक में भारत-सरकार द्वारा जारी किया गया वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 प्रस्तुत किया जा रहा है। मेरा विश्वास है कि, हम राजभाषा के प्रति भी जवाबदेही से अपने कार्य को पूरा करते रहेंगे।

यह वर्ष **आजादी के अमृत महोत्सव** का वर्ष है। जब हम अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष का उत्सव मनाएँगे; इस वर्ष विशेष में आइए हम सभी अपने राष्ट्र प्रेम- राष्ट्र भक्ति- राष्ट्र गौरव को नई ऊँचाइयों-नई सीमाओं और नए शब्दों से सजाएँ। अपने राष्ट्र के आन-बान-शान की नई मशालें जलाएँ। राष्ट्र को सम्मानित करें। इस राष्ट्र भावना के साथ आप सभी को 75 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

जय हिंद-जय भारत!

(श्रीधर पात्र)

नालको NALCO

राधाश्याम महापात्र
निदेशक (मासं)
Radhashyam Mahapatro
Director (HR)

पूरा देश पुन: महामारी की विनाश-लीला से गुजरा है। सरकारें, संस्थाएँ, चिकित्सा सुविधा प्रदाता, सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रतिष्ठान भी इस महामारी का सामना करने में एकजुटता से लगे रहे। हम इस पत्रिका और अपने पाठकों की ओर से इन सभी सरकारी एवं निजी संगठनों और उनके कर्मठ, जुझारू एवं मानवता को समर्पित कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। हम इस टीम-भावना के कारण ही फिर से उभर कर डटकर खड़े हैं। किंतु हमें आने वाले भविष्य हेतु सतर्कता बनाए रखनी है, कोरोना नियमों का पालन सुनिश्चित करना है। टीका-करण में अपनी सहयोगिता बरकरार रखकर भविष्य की तैयारी का उपाय करना है। इस उपाय के रूप में कंपनी की तरफ से भी कोविड की देख-भाल के लिए समर्पित केंद्रों की सेवा अब-तक जारी रखी गई है।

मैं इस अवसर पर, अपने सभी साथी कार्मिकों को भी साधुवाद देना चाहूँगा, जिनके अथक परिश्रम के कारण कठिन आर्थिक दौर में भी हमारी कंपनी व्यवसाय के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने में सफल रही। इसके लिए आप सभी के प्रयास प्रशंसनीय हैं। साथ ही, मैं भविष्य के लिए आप सभी से दोगुने जोश से लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहने का भी आह्वान करता हूँ।

आजादी के अमृतोत्सव के साथ हमारी गृह-पत्रिका 'अक्षर' का नवीनतम अंक आपके हाथों में है। वस्तुत: गृह-पत्रिका अपने कर्मचारियों की भाषायी एवं रचनाधर्मिता की आजादी का भी परिचायक है। जिसके माध्यम से कर्मचारी अपने विचारों को पन्नों पर प्रस्तुत कर शेष कर्मचारियों के सम्मुख अपनी बात रखने का अवसर भी पाते हैं। मुझे हर्ष है कि हमारी गृह-पत्रिका 'अक्षर' इन भावों की भागीरथी का संचार करते हुए, मानसिक सबलता के साथ साकार हो रही है।

आप सभी के व आपके परिजनों के उत्तम स्वास्थ्य कामना के साथ स्वतंत्रता के 75वें वर्षगाँठ की अशेष शुभकामनाओं सहित.....

03.08.2021

(राधाश्याम महापात्र)

नेशनल एल्यूमिनियम कम्पनी लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
निगम कार्यालय
नालको भवन, पी-1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751 013, भारत
फोन Phone 0674-2300430 (Off.), फैक्स FAX : 0674-2301751, ई-मेल Mail : dirhr@nalcoindia.co.in, radhashyam.mahapatro@nalcoindia.co.in
CIN : L27203OR1981GOI000920

National Aluminium Company Limited
(A Government of India Enterprise)
CORPORATE OFFICE
NALCO BHAVAN, P/1, Nayapalli, Bhubaneswar-751 013, India

संपादकीय

वर्ष 2021, स्वतंत्रता के 75 वर्षों के गौरव, सम्मान, प्रतिष्ठा और राष्ट्रीयता का वर्ष। हर भारतवासी-भारतीय के जातीय जुड़ाव की पहचान। जो किसी धर्म-जाति-समुदाय-वर्ग से नहीं एक भाव-एक एहसास-एक ध्वज से बनता है। बनता है अपनी विविधता से, अपनी एकता से, अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति और इन सबके बहुत ही महीन धागे से गूँथा जाकर, पिरोकर; धमनियों में, साँसों में, पहचान और तिरंगे के सम्मान में।

कोई भी राष्ट्र अपने नागरिक से विकसित, पल्लवित और सम्मानित भी होता है। राष्ट्र केवल एक भौगोलिक परिसीमा ही नहीं कही जा सकती, इसके मायने इससे कहीं अधिक व्यापक और अपरिभाषित हैं। राष्ट्र के संदर्भ में भारत और भारतीयता, शाब्दिक संरचना के साथ अपने स्वरूप और परिवेश में भी एक दूसरे से जुड़कर बने(ते) हैं, विकसित हो रहे हैं, पहचान प्राप्त कर(ते) रहे हैं। इनका संबंध प्राण-वायु और जीवन का है। देश के बिना नागरिक या नागरिक के बिना देश नहीं हो सकते। एक नागरिक, एक भारतीय के रूप में हमें अपनी जन्म भूमि(भारत) से वह सब प्राप्त हुआ है, जो आज हमारे पास है, जिसके साथ हम जी रहे हैं। जननी और जन्मभूमि के ऋण से हम कभी मुक्त नहीं हो सकते -**जननी, जन्म-भूमि स्वर्ग से महान है**- अपने देश का नागरिक होते हुए हम अपने राष्ट्र का गौरव, उसकी प्रतिष्ठा, उसके सम्मान का अंश प्राप्त करते हैं। जिससे हमारी भी मान-सम्मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है। पर हमारे इस अधिकार के साथ, हमारा दायित्व भी है, जिसे हमें जानने की तो नहीं, पर हाँ समझने की आवश्यकता जरूर है। सबसे पहले तो यह कि, देश से प्रेम करने का अर्थ है- देश की भूमि, जलवायु, संस्कृति, परंपरा, परिवेश, भाषा, भूषा, लोग, खान-पान, पहचान आदि-आदि से प्रेम करना है, इनकी हीनता से, विरोध से हम कहीं न कहीं अपने देश प्रेम को सवालिया निशान से घेरते हैं, उसे अपमानित करते हैं। क्यों कि, इन्हीं से ही मिलकर कोई भी देश बनता, अपनी पहचान हासिल करता है, संपन्न होता है। यह सभी किसी भी देश के आवश्यक अंग हैं।

इसी विभिन्नता में ही हमारे भारत देश की भी एकता, अखंडता और पूर्णता का वास है। हम अपने देश से बने(ते) हैं और हमारा देश हमसे बना(ता) है। ऐसे ही कुछ हम अपनी संस्था के लिए भी कह-समझ सकते हैं। तो चलिए अपने काम, अपने व्यवहार, अपनी सोच, अपने व्यक्तित्व और अपने से ऐसा कुछ भी करें, जिससे हम, हमारी संस्था और हमारा देश हम-पर, खुद-पर गर्व महसूस करें। जैसा कि, ओलम्पिक 2021 में खिलाड़ी महसूस कर रहें, देश(वासी) महसूस कर रहा है, बार्ड परीक्षा के परिणाम के बाद नालको के विभिन्न विद्यालय-छात्र-अभिभावक महसूस कर रहें हैं, प्रबंधन महसूस कर रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव के साथ पूरा देश महसूस कर रहा है। और विशिष्ट रूप से महसूस कर रहे हैं हम, अक्षर के वर्तमान अंक को प्रस्तुत करते हुए, जो देश के विभिन्नता की एकता और अखण्डता का एक बेहतरीन नमूना है। अपनी रचनाओं के संग्रहण में, विषय-वस्तु में, प्रस्तुति में। इस अंक सभी रचनाकारों का भी इस पल में धन्यवाद ज्ञापित करना आवश्यक है, जिनके शब्दों से ही हम देश की आत्मा (अखण्डता में एकता) को इस अंक में भी प्रस्तुत कर पा रहे हैं।

कहते हैं, **आत्मा अंश-जीव अविनाशी,** आत्मा नश्वर है। मानव अपने कृत्यों से अमर होते हैं। जैसे देश की स्वतंत्रता के साथ हमारे स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्र सेवक जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। रामनरेश त्रिपाठी इस प्रसंग में लिखते हैं- **"देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित। आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित"** – इससे यह तो सहज ही स्पष्ट है कि, देश प्रेम और आत्मा का विकास एक-दूसरे के पूरक हैं, एक दूसरे से जूड़े हैं, एक दूसरे को जोड़ते हैं। देश प्रेम में **मैं** या **मेरा** के बारे में नहीं सोचते! इसी से भारतीय दृष्टि विकसित होती है- **"वसुधैव कुटुम्बकम"**। महामारी की पीड़ा यकीनन गहरी है लेकिन इस अवसाद के समय में यह भी स्पष्ट रहा है कि, हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर के साथ मानवता को भी परिभाषित कर रहे हैं। यही मानवता, जो आत्मा के विकास से प्राप्त होती है। जिससे एक-दूसरे के लिए जीने की प्रेरणा मिलती है और मानव जन्म को सार्थक करने का अवसर भी प्राप्त होता है।

अक्षर के वर्तमान अंक के साथ स्वतंत्रता और मानवता के अप्रतीम शुभकामनाओं सहित यही कामना है कि, हम अपने स्वतंत्र भाव-विचार-आचरण से देश और मानवता की सेवा कर, अपने दायित्वों को पूरा कर, समाज में परिवार का, देश में समाज का और विश्व में देश का नाम रोशन करें।

जय उत्कल-जय हिंद

संपादक

रोशन पाण्डेय

उप प्रबंधक (राजभाषा)

नालको हेतु एल्यूमिनियम के अतिरिक्त अन्य सम्भाव्य क्षेत्र

चिरन्तन श्याम

नालको भारत की सबसे बड़ी बॉक्साइट-एल्यूमिना-एल्यूमिनियम- ताप विद्युत गृह की एकीकृत संयंत्र वाली कंपनी है। यह विश्व का सबसे सस्ता एल्यूमिना और एल्यूमिनियम की निर्माता है। हम सदैव एल्यूमिनियम क्षेत्र में ही विस्तार के बारे में सोचते हैं। एल्यूमिनियम के क्रय-विक्रय के दर का निर्धारण लन्दन मेटल एक्सचेंज (एलएमई) के द्वारा निर्धारित किया जाता है। दाम कम होने से नुकसान और दाम ज्यादा होने से लाभ होता है। विगत कुछ वर्षों से एल्यूमिनियम का दाम कम होने से लगातार लाभ में कमी आ रही है। अत: अब समय आ गया है कि हम एल्यूमिनियम से अलग कुछ अन्य क्षेत्रों में विस्तार के बारे में सोचें, जहाँ पूँजी की लागत कम हो, किन्तु शुद्ध एवं निरन्तर लाभ प्राप्त हो। इस प्रकार हम नालको के लाभ में होने वाले उतार-चढ़ाव को कम कर सकते हैं।

नालको निगम सामाजिक उत्तरदायित्व योजना के तहत औद्योगिक प्रशिक्षण, स्कूली शिक्षा, चिकित्सा सुविधा इत्यादि का काम करता है। इन्हें व्यापक रूप में व्यवसाय के रूप में अपनाकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। ताप विद्युत के साथ सौर एवं पवन ऊर्जा से भी हजारों करोड़ों का लाभ हो सकता है। अपनी समस्या जैसे – फ्लाई एश, रेड मड, स्पेन्ट पॉट लाइनिग का प्रयोग कर हम नए उद्योग बढ़ाकर रोजगार प्रदान कर सकते हैं। विस्तार की पाँच सम्भावनाओं को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकते हैं:-

1. **विद्युत ऊर्जा निर्माण एवं विक्रय के क्षेत्र में –** इसे हम ताप विद्युत ऊर्जा, सौर विद्युत ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा में बाँट सकते हैं –

i. **ताप विद्युत संयंत्र द्वारा –** नालको केंद्रीय विद्युत संयंत्र की 10 इकाईयों से 1200 मेगावाट विद्युत उत्पन्न होती है। इसका प्रयोग खान, परिशोधक, प्रद्रावक और इन उत्पादन एककों की टाउनशिप में होता है। 500 – 500 मेगावाट की दो इकाईयों के निर्माण से 1000 मेगावाट विद्युत ऊर्जा प्राप्त होगी। बाज़ार में इसे 6 रू प्रति यूनिट की दर से बेचने पर दैनिक आधार पर 14 करोड़ का शुद्ध लाभ प्राप्त होगा। इस विद्युत ऊर्जा को हम ग्रिड या आसपास के औद्योगिक कारखानों को बेचकर लाभ पा सकते हैं।

ii. **सौर ऊर्जा द्वारा –** नालको के पास प्रचुर मात्रा में भूमि क्षेत्र उपलब्ध है। भवनों की छतें हैं। इन स्थानों का प्रयोग सोलर सेल संयंत्र लगाकर विद्युत ऊर्जा उत्पादन में किया जा सकता है। आजकल जल की सतह पर सोलर प्लांट लगाया जा रहा है। तापीय विद्युत वाले कोयला विद्युत गृह प्रदूषण पैदा करते हैं। अत: भारत सरकार सौर ऊर्जा को बढ़ाने हेतु प्रोत्साहन राशि भी दे रही है, जो इस प्लांट की लागत को कम कर देती है।

नालको के निगम कार्यालय की छत पर 260 किलोवाट का, एन.आर.टी.सी. की छत पर 50 किलोवाट का तथा टाउनशिप में 320 किलोवाट का सोलर प्लांट है। जो इस प्रतिष्ठान की सारी विद्युत आपूर्ति को पूरा कर कंपनी के खर्च को कम कर रही है। बची हुई विद्युत को हम अन्य लोगों को बेचकर धन भी कमा सकते हैं।

iii. **पवन ऊर्जा द्वारा –** नालको इस क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। राजस्थान के लुधर्वा में 47.6 मेगावाट का, देवीकोट में 50 मेगावाट का, महाराष्ट्र के सांगली में 50.4 मेगावाट का और आन्ध्र प्रदेश के गण्डीकोटा में 50.4 मेगावाट का पवन ऊर्जा संयंत्र है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में अन्य संयंत्र लगाकर या इनका विस्तार कर हम निरन्तर लाभ पा सकते हैं।

2. **ईट एवं टाइल्स उद्योग स्थापित करके –** नालको के परिशोधक से रेड मड निकलता है, जिसमें कास्टिक होता है, यह जमीन को बंजर बनाता है। इसी प्रकार, प्रद्रावक से पॉट लाइनिंग निकलती है, जो

सायनाइड के कारण विषाक्त होती है। पॉवर प्लांट में प्रयोग होने वाले कोयले में 34% फ्लाई एश होती है, जिसके निस्तारण में कंपनी का काफी धन खर्च होता है।

हम इन आपदाओं या समस्याओं को अवसर में बदल सकते हैं। इस हेतु हम निम्न उद्योगों की स्थापना पर विचार कर सकते हैं –

I. **टाइल्स उद्योग –** उचित स्थान पर टाइल्स बनाने का प्लांट लगाकर हम अपनी समस्या रेड मड, पॉट लाइनिंग स्पेंट एवं फ्लाई ऐश का प्रयोग कर लाभ पा सकते हैं। प्लांट हेतु जमीन, मशीन, सीमेंट, जल, भट्ठी का प्रयोग होगा। आज टाइल्स की माँग घर, बाहर, व्यवसायिक, भवन, स्टेशन इत्यादि में बहुत है, क्योंकि ये टिकाउ होती है और आसानी से साफ हो जाती है। ये मंहगी बिकती है। अत: नालको को टाइल्स उद्योग से अच्छा लाभ होगा।

II. **फ्लाई एश ईट निर्माण उद्योग –** साधारण मिट्टी के ईटों की अपेक्षा फ्लाई एश के ईटों के निम्नलिखित लाभ हैं:

i. फ्लाई एश ईट हल्की होती है। अत: इनका प्रयोग ऊँची इमारतों में आसानी से हो सकता है।

ii. घनत्व अधिक होने के कारण ये पानी एवं गारा कम सोखता है। जिससे निर्माण लागत कम हो जाती है। यह ज्यादा दबाव सह सकती है।

अत: आने वाले समय में फ्लाई ऐश ईटों की मांग बढ़ेगी। हम अपने फ्लाई ऐश से ईंट बनाने के संयंत्र को व्यापक व व्यवस्थित तौर पर संचालित करके विस्तृत स्तर पर ईंट की माँग की आपूर्ति करके लाभ अर्जित कर सकते हैं।

इस प्रकार हम अपनी समस्याओं के समाधान के साथ-साथ उनसे लाभ भी अर्जित कर सकते हैं।

3. **चिकित्सा के क्षेत्र में विस्तार करके –** नालको की सभी इकाईयों में चिकित्सालय है, किन्तु उसके जाँच व इलाज की अपनी सीमाएँ हैं। बड़ी और आकस्मिक बीमारी के लिए मँहगे चिकित्सालयों में जाना पड़ता है, जिससे कम्पनी का धन व्यय होता है

"सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया"

सभी सुखी रहें, सभी निरोगी रहें। ऐसे विचार को मन में रखकर नालको निम्नलिखित क्षेत्रों में विस्तार कर सकता है –

i. **चिकित्सीय जाँच केन्द्र खोलकर –** नालको एक केन्द्रीय एवं कई जिला स्तरीय जाँच केन्द्र खोलकर आम जनता अपने कर्मचारी एवं सेवा निवृत्त कर्मचारियों को कम दाम पर सटीक परीक्षण सेवाएं दे सकता है। जिससे एक बार खर्च कर भविष्य में आवर्ती खर्चों से निजात पा कर धन की बचत की जा सकती है। आम जन को कम दाम पर सही सुविधा मिलेगी और कई लोगों को रोजगार मिलेगा।

ii. **चिकित्सा को व्यवसाय बनाकर –** नालको एक बार पूँजी लगाकर देश के विभिन्न क्षेत्रों में चिकित्सालय बना दे, तो ये चिकित्सालय लोगों का इलाज कर अपने खर्च को उठा सकेंगे और नालको को करोड़ों का लाभ भी प्राप्त होगा। लोगों को इलाज़ के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। कम खर्च में अच्छी चिकित्सीय सेवा मिल जाएगी।

उदाहरण:

क) टाटा समूह का टाटा मेमोरियल सेन्टर कैंसर पीड़ितों के इलाज के साथ-साथ लाभ भी कमा रहा है।

ख) आदित्य बिड़ला मेमोरियल अस्पताल लोगों का इलाज़ कम दाम में करके सेवा तो कर रहा है, साथ में लाभ भी कमा रहा है।

4. **तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र एवं शिक्षण संस्थान खोलकर –** नालको के इस क्षेत्र में आने से कर्मचारियों की गुणवत्ता में सुधार होगा, साथ ही समाज में लोगों का तकनीकी शिक्षा स्तर सुधरेगा।

i. **तकनीकी संस्थान की स्थापना करके –** नालको भारत सरकार की मदद से आई.टी.आई. संस्थान खोल सकता है। यहाँ पर छात्रों को वेल्डर, ड्रिलर, फीटर, मोटर बाइन्डर, वायरिंग, पाइपिंग इत्यादि की व्यवसायिक शिक्षा दी जा सकती है। कोर्स का शुल्क नालको को लाभ के रूप में लगातार मिलता रहेगा। भवन, मशीन, शिक्षक एवं स्टॉफ के खर्च के बाद शेष राशि लाभ में रूप में प्राप्त होगी।

ii. **तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करके –** नालको में खान से खनिज का खनन, परिशोधन, प्रद्रावक एवं विद्युत उत्पादन का कार्य होता है। इन

क्षेत्रों के विशेषज्ञ हमारी कंपनी में कार्यरत हैं। इनकी प्रशिक्षण कोर्स एवं कंपनी भ्रमण का शुल्क लाखों में होता है, जो एनटीपीआई जैसी संस्थाएं प्रदान करती हैं। नालको अपने प्रशिक्षण केन्द्र के माध्यम से आसपास के उद्योगों के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देकर करोड़ो रूपए कमा सकता है।

5. **होटल व्यवसाय में प्रवेश करके –**

"पर सेवा परमो धर्मः"

भारतीय संस्कृति में दूसरों की सेवा करना धर्म बताया गया है। नालको के भुवनेश्वर, दिल्ली, कोलकाता, विशाखापट्टणम में अतिथि गृह है। इनका इस्तेमाल कर्मचारियों के साथ बाहरी अतिथि के ठहरने के लिए भी किया जा सकता है। इस तरह नालको को होटल उद्योग में हाथ आजमाना चाहिए। उदाहरणार्थ – टाटा कंपनी के होटल देश के विभिन्न शहरों में हैं।

इस उद्योग में भूमि का खर्च, भवन एवं रहन सामग्री का खर्च एक बार ही होगा। बाकी के खर्च की पूर्ति रखरखाव एवं कर्मचारियों से होगी। नालको जैसी कंपनी धीरे-धीरे इस उद्योग में प्रवेश कर सकती है। बाद में, इसमें नाम मात्र के रखरखाव खर्च के बाद लाभ ही लाभ प्राप्त होगा।

वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक)
पावर हाउस परिचालन विभाग
ग्रहीत विद्युत संयंत्र, अनुगुळ

जापानी भाषा में हिंदी एवं संस्कृत के प्रमुख शब्दः

क्रम	हिंदी एवं संस्कृत के प्रमुख शब्द	जापानी शब्द (अर्थ और उच्चारण से मिलते-जुलते)
1	शरीर	शरी
2	नरक	नरक
3	उषा	असा
4	नमः	नम
5	भिक्षु	बिकु
6	भिक्षुणी	बिकुनी
7	दान	दन्न
8	मुनि	मुनि - ऋषि
9	असुर	असुरा
10	राक्षस	रासेत्स
11	ऊँ	अं / अऊँ – मंत्र – सिंगोग बोलने के पहले जैसे हम 'ऊँ' से शुरू करते हैं।
12	अम्बा / अम्मा	अमा – पहले महिलाओं के लिए जापानी में प्रयुक्त होता था अब यह केवल मछली पकड़ने वाली महिलाओं के लिए होता है।
13	यम	येम्मा
14	कोष	कुषा
15	सिंह	सिस
16	स्तूप	सोतोबा
17	निर्वाण	नेहान
18	चन्दन	व्यक्दन
19	वीणा	बिवा
20	बोधि	बोदाय
21	माया	मया
22	मंडल – समूह	मंडला
23	यक्ष	यशा – बुरे काम करने वाले देवता
24	योग	युगा
25	अरण्य – जंगल	रन्य
26	आचार्य	अजारि
27	अक्षर	असार
28	ध्यान	जेन्ना
29	क्षण	सेत्सन – क्षन
30	संघ	सो
31	कुम्भीर	कोम्पिरा
32	ब्राह्मण	बारामोन
33	तोरण	तोरी
34	सेवा	सेवा
35	धर्म	दारूमा

पेपरलेस ऑफिस कैसे बनाया जा सकता है? इसमें ई-ऑफिस कैसे सहायक है?

प्रमोद कुमार त्रिपाठी

पेपरलेस ऑफिस, जिसे पेपर फ्री ऑफिस भी कहा जाता है, एक कार्य वातावरण है, जो न्यूनतम भौतिक पेपर का प्रयोग करता है और इसके बजाए मुख्य रूप से डिजिटल दस्तावेज़ों का उपयोग करता है। पेपरलेस कर्मचारी वह कार्यकर्ता होता है, जिसने कार्यस्थल में काग़ज के उपयोग को समाप्त या बहुत कम कर दिया है, पेपर फाइलों को इलेक्ट्रानिक फाइलों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को डिजीटलीकरण कहा जाता है।

पूरी तरह से कागज़ रहित कार्यालय का विचार आधुनिक कार्यस्थल का आधार बन गया है। इलेक्ट्रानिक दस्तावेज़ों और ईमेल के प्रसार के बावजूद अधिकांश संगठन अभी भी काग़जी दस्तावेज़ों पर भरोसा करते हैं।

पिछले साल संसदीय मामलों के मंत्रालय ने डिजिटल प्लेटफार्म पर विधायिका प्रणाली लाने के लिए 739 करोड़ रूपए की परियोजना की शुरूआत की। लोकसभा अगले सत्र में काग़ज रहित नीति अपनाकर जल्द ही डिजिटल होने जा रही है। संसद के सदस्य अब प्रश्नों को लिखने के लिए डिजिटल दस्तावेज़ों का उपयोग करेंगे। संसाधनों को बचाने से लेकर सुरक्षा बढ़ाने तक पेपरलेस होने के कई लाभ हैं।

पेपरलेस होने के फायदे

समय की बचत

काग़जी दस्तावेज़ों को दर्ज करने, व्यवस्थित करने और खोजने के लिए समय अधिक लगता है। किंतु डिजीटाइज किए गए दस्तावेज़ एक प्रमुख सर्वर में संग्रहीत किए जाते हैं, जो मूल रूप से एक सुव्यवस्थित डिजिटल फाइलिंग कैबिनेट है, जहाँ आपके सभी दस्तावेज़ सुरक्षित रहते हैं और आसानी से खोजे जा सकते हैं।

स्थान की कम खपत

पेपर दस्तावेज़ों को रखने व संभालने के लिए बहुत जगह की आवश्यकता होती है। जबकि फाइलों को डिजीटाइज करने से आप सभी दस्तावेज़ों को ऑनप्रिगाइसेस – सर्वर या क्लाउड में स्टोर कर सकते हैं।

धन की बचत

डिजिटल हो जाने से प्रक्रिया में सुधार होता है, जिससे आपको पैसे की बचत होती है। पेपरलेस कार्यालय एक ही समय में पारम्परिक कार्यालयों की तुलना में बहुत अधिक मात्रा में काग़जी कार्रवाई कर सकते हैं।

सूचना का स्थानांतरण

जानकारी को बहुत ही आसानी से डिजिटल रूप से संग्रहीत कर किसी अन्य डिवाइस में स्थानांतरित किया जा सकता है।

पर्यावरण को बढ़ावा देता है

काग़ज उत्पाद ग्रीनहाउस गैसों का उत्पादन करते हैं, जिससे वनों की कटाई और ग्लोबल वार्मिंग होती है। अधिकांश काग़ज अंतत: लैंडफिल में समाप्त हो जाते हैं। काग़ज रहित कार्यालय ना केवल काग़ज के उपयोग को कम करने के लिए अपितु पर्यावरण के सुरक्षा में भी सहायक होगा।

सुरक्षा बढ़ाता है

भौतिक दस्तावेज़ों को सुरक्षित रखना मुश्किल होता है – काग़ज खो सकते हैं, गुम हो सकते हैं या नष्ट हो सकते हैं। दस्तावेज़ प्रबंधन साफ्टवेयर में उन्नत सुरक्षा क्षमताएँ हैं, जो इन चुनौतियों का सामना आसानी से कर सकती हैं।

भारत की संसद काग़ज रहित हो रही है और हर अप्रयुक्त टन 24 वृक्षों को बचाएगा। दिल्ली अपने सभी विभागों में ई-ऑफिस लागू करने वाला पहला राज्य होगा।

अरूणांचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू ने कहा है कि सभी राज्य के सरकारी कार्यालय 2021 तक पेपरलेस ई-ऑफिस बन जाएँगे।

पेपरलेस ई-ऑफिस बनाने के कुछ आसान उपाय

1. कर्मचारियों को उपकरण और प्रशिक्षण प्रदान करें।
2. अपने स्मार्टफोन से बिल और रसीदों को स्कैन करें।
3. अपने व्यवसाय कार्ड को स्कैन करें।
4. बैंकों से पेपरलेस स्टेटमेंट का अनुरोध करें।
5. अपने विक्रेताओं को ईमेल के माध्यम से चालान भेजने के लिए कहें, ईमेल के माध्यम से पी.ओ. भेजें।
6. आंतरिक दस्तावेज़ों का डिजिटलीकरण करें।
7. ऑनलाइन दस्तावेज़ साझा करें।
8. जो कर्मचारी पेपरलेस प्रक्रिया में योगदान करें, उन्हें पुरस्कृत करें।
9. एक नया पेपरलेस फाइलिंग सिस्टम तैयार करें।
10. फाइल आलमारियों से डिजिटल स्टोरेज पर विचार करें।
11. काग़ज रहित आंतरिक संचार करें।

ई-ऑफिस

ई-ऑफिस प्रणाली एक एकीकृत फाइल और रिकार्ड प्रबंधन प्रणाली है, जो कर्मचारियों को सामग्री का प्रबंधन करने, आंतरिक रूप से डेटा की खोज करने और सहयोग करने की अनुमति देता है।

ई-ऑफिस के फायदे

1. पारदर्शिता बढ़ाता है। फाइलों को ट्रैक किया जा सकता है और उनकी स्थिति हर समय सभी को पता होती है।
2. जवाबदेही बढ़ाता है। गुणवत्ता और निर्णय लेने में आसानी होती है।
3. डेटा सुरक्षा और डेटा अखंडता का आश्वासन होता है।
4. कर्मचारियों के ऊर्जा की बचत होती है।
5. कार्यस्थल और प्रभावी ज्ञान प्रबंधन में अधिक सहयोगी होता है।
6. ठोस दस्तावेज़ सुरक्षा और गोपनीयता होती है।
7. पर्यावरण के अनुकूल है।
8. कम खर्चीला ग्राहक संचार प्रणाली है।
9. आर्थिक रूप से अधिक लागत प्रभावी है।
10. कम दैनिक डेटा संग्रहण और आपूर्ति लागत है।
11. ग्राहक सेवा सुगम होती है।
12. महत्वपूर्ण कार्य पर अधिक समय दिया जा सकता है।

ई-ऑफिस की शुरूआत से संगठनों की सटीकता और दक्षता में सुधार होगा। इस तरह सेवा के स्तर में सुधार आएगा। लगात कम होगा और काग़ज की खपत में भारी कमी आएगी।

वरिष्ठ प्रबंधक (सतर्कता)
खान एवं परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी

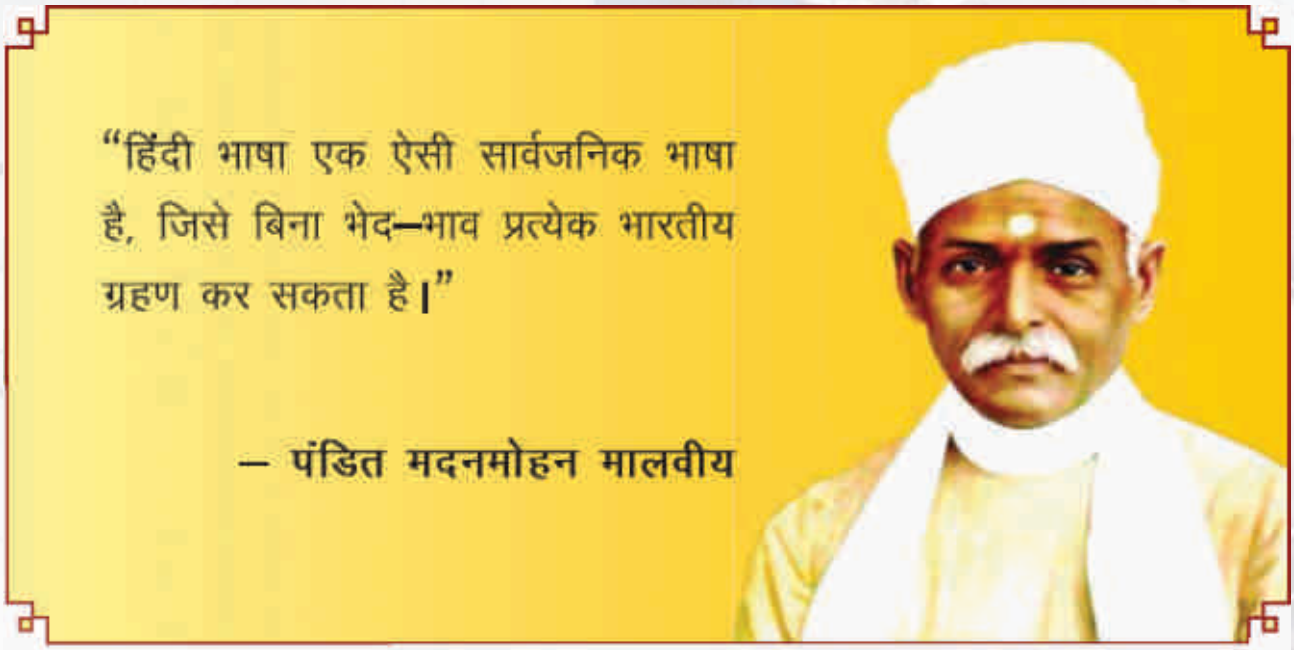

प्रचालन विभाग (बिजली घर): कार्य एवं उत्पादन रेखा में योगदान

अखिल कुमार

नालको सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम है जो कि एल्यूमिनियम और एल्यूमिना का उत्पादन करता है। नालको बॉक्साइट का खनन उसके परिशोधन और परिशोधित एल्यूमिना से एल्यूमिनियम का उत्पादन करता है। एल्यूमिनियम के उत्पादन में जो कुल लागत है उसका 38% उत्पादन में प्रयोग होने वाली बिजली की कीमत होती है। नालको में एल्यूमिनियम उत्पादन के लिए बिजली की आपूर्ति नालको के ही 10x120 मेगा वाट के ग्रहीत विद्युत संयंत्र द्वारा किया जाता है। ग्रहीत विद्युत संयंत्र में 10 इकाई यानी की 120 मेगा वाट के 10 बॉयलर हैं। बिजली उत्पादन के लिए ग्रहीत विद्युत संयंत्र में कई विभाग निर्धारित किए गए हैं जिनमें से एक प्रचालन विभाग (बिजली घर) भी है।

प्रचालन विभाग (बिजली घर) का नेतृत्व महाप्रबंधक स्तर के अधिकारी द्वारा किया जाता है। प्रचालन विभाग को निरंतर 24 घंटे बिजली उत्पादन की प्रक्रिया के देख रेख का काम करना होता है, इसलिए प्रचालन विभाग को 4 ग्रुप में विभक्त किया गया है जो कि तीन शिफ्ट में काम करते हैं । इसके अलावा कुछ लोगों को प्रतिदिन जनरल शिफ्ट में भी आना होता है। हर ग्रुप में लगभग 23 अधिकारियों और जरूरत के अनुसार क्षेत्रवार प्रचालकों (ऑपरेटर) की नियुक्ति की गई है। इसके अलावा कुशल, अकुशल और अर्धकुशल अनुबंधित मजदूरों को भी विभिन्न कार्यों के लिए रखा जाता है।

प्रत्येक दस इकाईयों में एक इकाई प्रभारी एवं कम से कम एक पैनल इंजीनियर होता है इसके अलावा उपलब्धता के अनुसार प्रचालकों एवं अनुबंधित मजदूरों की ईकाइयों में नियुक्ति होती है। ये सभी लोग संयुक्त रूप से अपने ग्रुप के स्टेशन प्रभारी को रिपोर्ट करते हैं। चारो ग्रुप के स्टेशन प्रभारी प्रचालन महाप्रबंधक को रिपोर्ट करते हैं। इसके अलावा प्रचालन विभाग के जनरल शिफ्ट में आने वाले अधिकारी एवं प्रचालक भी व्यक्तिगत तौर पर प्रचालन महाप्रबंधक को रिपोर्ट करते हैं।

प्रचालन विभाग (बिजली घर): महत्व

प्रचालन विभाग की कार्यकुशलता, उसकी महत्ता और उत्पादन रेखा में उसके योगदान का मौद्रिक परिमाणीकरण करने के लिए घरेलू स्तर पर हुए बिजली उत्पादन में निहित लागत को बाजार में उपलब्ध बिजली के भाव से तुलना करना जरूरी है। ग्रहीत विद्युत संयंत्र के द्वारा किये गये बिजली उत्पादन की लागत ज्यादा से ज्यादा 3.5 रुपया प्रति यूनिट है जबकी अगर ग्रिड से बिजली का निर्यात किया जाए तो प्रति यूनिट की कीमत 5.40 रुपये होगी। इससे यह गणितीय निष्कर्ष निकलता है कि घरेलू बिजली उत्पादन करने से नालको को लागत में लगभग 1.9 रुपये प्रति यूनिट की बचत होती है। इस आर्थिक विश्लेषण से यह बात समझ में आती है कि प्रचालन विभाग के ऊपर विद्युत उत्पादन के कार्य को दक्षतापूर्वक एवं प्रभावशील तरीके से निर्वहन करने की जिम्मेदारी होती है। इनके ऊपर जवाबदेही होती है कि ये बिजली उत्पादन की लागत को कम से कम बनाए रखें।

प्रचालन विभाग को लागत को अनुकूल बनाए रखने के लिए कच्चे माल की खपत पर नियंत्रण करना होता है। बिजली उत्पादन में मुख्यतः निम्नलिखित कच्चे माल होते हैं- कोयला, लवण रहित जल, ईंधन तेल और सहायक मशीनों में खपत होने वाली बिजली (आनुषंगिक बिजली)। इन कच्चे माल की खपत का एक मानदण्ड पूर्व-निर्धारित होता है जिससे संदर्भित न्यूनतम असंगति बनाए रखते हुए प्रचालन विभाग को बिजली उत्पादन करना होता है। प्रचालन विभाग को किसी अनावश्यक और अनचाहे बॉयलर ट्रिपिंग से भी बचना होता है। ग्रिड में गड़बड़ी होने से या प्रद्रावक में खपत अचानक से कम होने से (लोड थ्रो ऑफ) या बिजली घर की प्रक्रिया में मानक (पैरामीटर) की गड़बड़ी से बॉयलर के ठप्प होने की संभावना होती है। ऐसे मौकों पर प्रचालन विभाग में कार्यरत अभियंताओं को अपने कौशल का प्रयोग कर अनहोनी को टालना होता है।

इस सब के अलावा प्रचालन विभाग पर प्रदूषण नियंत्रण की

भी ज़िम्मेदारी होती है। एक पूर्व-निर्धारित मानक से ज्यादा वायु प्रदूषक का उत्सर्जन वर्जित है । साथ ही साथ बिजली घर से निकलने वाली राख को निरंतर उचित जगह पर स्थानांतरित करना होता है।

प्रचालन विभाग (बिजली घर): कार्य

दैनिक कार्य

1. पैनल अभियंता द्वारा यूनिट कंट्रोल रूम में प्रदर्शित होने वाले मुख्य आँकड़ों का लेखा जोखा लिया जाता है। एक यूनिट को चलाने के लिए मानदण्डों का ख्याल रखना होता है। उदाहरण के तौर पर जल-भाप का सर्वाधिक और न्यूनतम तापमान निर्धारित है इससे ज्यादा या कम होने पर उपकरणों को भारी क्षति पहुँच सकती है। अतः इससे बॉयलर एवं टरबाइन और अन्य उपकरणों की सलामती और सुव्यवस्था सुनिश्चित किया जाता है।

2. पैनल अभियंता द्वारा आपातकालीन उपकरणों की विश्वसनीयता परखना। उदाहरण के तौर पर आपातकालीन जनरेटर और आपातकालीन ल्यूब ऑइल पम्प चला कर देखना। इससे आपातकालीन विश्वसनीयता को सुनिश्चित किया जाता है।

3. इकाई प्रभारी द्वारा दैनिक सूचना इकट्ठा करके अपने खाते में दर्ज करना। उदाहरण के तौर पर "रासायनिक प्रयोगशाला रिकॉर्ड" इसमें बॉयलर की विभिन्न जगहों पर कार्यात्मक द्रव (पानी) में रासायनिक अवशिष्ट पदार्थों की मात्रा को दर्ज करना।

4. पैनल अभियंता और इकाई प्रभारी द्वारा क्षेत्रीय प्रचालक से संपर्क करना और विभिन्न उपकरणों की स्थिति का जायजा लेना; इससे क्षेत्रों में स्थित सभी उपकरणों की दक्षता एवं प्रभावशीलता सुनिश्चित होती है।

5. क्षेत्रीय और कंट्रोल रूम के निरीक्षण से मिले त्रुटियों को रामको सॉफ्टवेयर में दर्ज करना तथा संबंधित रखरखाव विभाग को सूचित करना। इससे समयानुकूल उपकरण की उपलब्धता सुनिश्चित होती है।

6. बॉयलर की भट्टी में वाटर वाल पर राख की पर्तें जम जाती हैं, जिसको हर शिफ्ट में बॉयलर में ही उत्पादन होने वाले भाप से ब्लोअर द्वारा धोया जाता है। इसी तरह हर शिफ्ट में हवा के पूर्व तापक को भी भाप ब्लोअर से धोया जाता है। इससे बॉयलर की ऊष्मा निर्गम तापमान अपनी सीमा में बना रहता है।

7. बॉयलर और टरबाइन की ऊष्मा दर और दक्षता का लेखा-जोखा रखना। विभिन्न उपकरणों का प्रदर्शन एवं प्रभावशीलता दर्ज करना। जैसे वैक्यूम कंडेनसर की प्रभावशीलता पता करना और उसको खाते में दर्ज करना। इससे बिजली उत्पादन की आर्थिकी पर नियंत्रण बना रहता है ।

नियोजित कार्य

1. पैनल अभियंता द्वारा उपकरणों की बदली की जाती है। अतिरिक्त उपकरण जो सेवा में नहीं हैं उसको सेवा में लिया जाता है और जो पहले से सेवा में है उसको आराम दिया जाता है। इससे उपकरणों की आयु लंबी होती है और उनका कार्यभंग नहीं होता। ज्ञात हो कि किसी भी उपकरण को लगातार सेवा में रखना या लगातार निष्क्रिय रखना दोनों ही उनकी लंबी आयु व कार्यशीलता के लिए ठीक नहीं है। उदाहरण के तौर पर बॉयलर फीड पम्प हर इकाई में दो होते हैं जिनको आपस में हर 15 दिनों पर बदला जाता है।

2. ईंधन तेल के नालों (ऑइल गन) की हर सोमवार और शनिवार की सुबह वालीं शिफ्ट में जांच परीक्षण किया जाता है। क्योंकि आपातकालीन स्थिति में जब कोई बाधा या समस्या आती है तो ऑइल गन को सेवा में लेकर बॉयलर को स्थिर किया जाता है। एक बॉयलर ट्रिपिंग से लाखों का नुकसान होता है। अतः ऑइल गन की विश्वसनीयता को सुनिश्चित करना जरूरी है।

3. यूनिट के शट डाउन या स्टार्ट अप की प्रक्रिया को भी अंजाम दिया जाता है।इसके लिए भेल के द्वारा सेट किए गए मानकों को ध्यान में रखते हुए ही कार्य करना होता है। कम से कम ईंधन तेल की खपत और कम से कम पानी की खपत होनी चाहिए।

संसाधनों का बचत कार्य

1. प्रचालन विभाग के समक्ष कंडेंसर को प्रभावशाली बनाए रखने की चुनौती होती है। वैक्यूम बनाए रखने से कम ईंधन में ज्यादा बिजली का उत्पादन कर सकते हैं। अतः प्रचालन विभाग समय-समय पर

ऑनलाइन कंडेंसर की सफाई करती है। इस काम के लिए हर इकाई में एक व्यवस्था निर्मित है जिसकी मदद से कंडेंसेर के ट्यूबों से गंदगी को निकाला जाता है।

2. शरद ऋतु में जब ठण्ड के कारण वैक्यूम .9 से ज्यादा हो जाता है तो इकाई प्रभारी समयानुकूल कूलिंग टॉवर पर चलने वाले 6 पंखों में से एक को बंद कर देते हैं और इकाई को भी 1.5 कूलिंग वाटर पम्प से चलाते हैं। मतलब 2 इकाई को 4 की जगह तीन पंप से चलते है। इससे उर्जा की बचत की जाती है।

3. सर्विस कोम्प्रेस्सेड हवा का दबाव 5 किलोग्राम/सेंटी मीटर वर्ग से ज्यादा होने पर स्टेशन प्रभारी अपनी समझ-बूझ से समयानुकूल एक कम प्रभावशील कोम्प्रेस्सर को बंद करके ऊर्जा की बचत करते हैं।

4. इकाई प्रभारी एवं स्टेशन प्रभारी का यह दायित्व होता है कि किसी भी वाल्व से जल वाष्प को निहायत ही ना निकलने दें। जब पम्प सेवा में हो तो सभी पुनःपरिसंचरण लाइन को बंद रखें।

मुख्य निष्पादन संकेतक (के पी आई)

प्रचालन विभाग का प्रदर्शन मुख्यतः उसके द्वारा खपत किए गए कच्चे माल और इकाइयों के सफल (बीना ट्रिपिंग) के संचालन से मापा जाता है। इसके लिए प्रचालन विभाग को वार्षिक लक्ष्य दिया जाता है। प्रचालन विभाग के कुछ प्रदर्शन या कार्य निष्पादन संकेतक संबंधित लक्ष्य के साथ निम्नलिखित हैं।

1) कोयले की विशिष्ट खपत(किलोग्राम/किलोवाट-घंटा)= (0.815)

2) सहायक बिजली की खपत (सकल उत्पादन का%)= (11.4%)

3) डीएम पानी की खपत = (1.60%)

4) तेल की विशिष्ट खपत (मिलीलीटर/किलोवाट-घंटा)=(0.80)

5) प्रति हजार कार्य घंटों में यूनिट ट्रिपिंग की संख्या = (0.45)

प्रचालन विभाग की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

प्रचालन विभाग ने विगत 10 सालों में विभागीय लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की है।

1. कोल्ड स्टार्टअप में सबसे कम औसत ईंधन तेल की खपत: 25.56 घंटे (2018-19) ।

2. सबसे कम मासिक ईंधन तेल की खपत (पिछले दस वर्षों के भीतर): 0.036 मिली लीटर/किलो वाट घंटा (दिसम्बर-2017) ।

3. सबसे कम वार्षिक ईंधन तेल की खपत (पिछले दस वर्षों के भीतर): 0.423 मिली लीटर/ किलो वाट घंटा (2017-18) ।

4. सबसे कम यूनिट ट्रिप आउट / वर्ष (पिछले दस वर्षों के भीतर): 16 बार (2014-15)

5. परिचालन के कारण ट्रिप आउट की सबसे कम संख्या (पिछले दस वर्षों के भीतर): शून्य (2014-15)

ग्रहीत विद्युत संयंत्र के नाम कुछ कीर्तिमान जहाँ प्रचालन विभाग (बिजली घर) ने अहम भूमिका अदा की ।

1) 31 जुलाई 2012 को जब देश को ऐतिहासिक ग्रिड विफलता से गुजरना पड़ा था। तब नालको ग्रहीत विद्युत संकुल ग्रिड से पृथक हो कर ट्रिपिंग से बच गया। बाद में नालको ने पूर्वी ग्रिड को आरंभिक बिजली प्रदान किया।

2) ग्रहीत विद्युत संकुल की बॉयलर-5 के नाम 312 दिनों का और बॉयलर-10 के नाम 210 दिनों का बिना रुके चलने का कीर्तिमान है।

3) 2 जून 2016 को काल-बैसाखी के समय प्रद्रावक ने 570 मेगा वाट का लोड "थ्रोऑफ" किया था; जिसको प्रचालन विभाग ने सफलतापूर्वक संभाला और किसी भी बॉयलर को ट्रिप नहीं होने दिया।

प्रचालन (बिजली घर) विभाग का काम यूँ तो दैनिक आधार पर एक पूर्व-निर्धारित कार्य है किन्तु कभी कभी प्रतिकूल परिस्थिति में इस विभाग के लोगों को ऐसी कुशलता से काम करना होता है जैसे कोई आपदा प्रबंधन का कार्य कर रहे हों।

उप प्रबंधक (प्रचालन)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुगुळ

कंपनी में कर्मचारी: उत्साह से विकास की ओर

शिवम मिश्र

कार्य(श्रम) एक पूजा है या नारा या कथन,सदैव ही प्रासंगिक, प्रेरक एवं जीवन उपयोगी है। चाहे हम सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिवर्तन के किसी भी कालखंड को ले लें , इसकी महत्ता सदैव ही रही है। कदाचित ही कोई ऐसा क्षेत्र रहा हो जहाँ इस नारे के महत्व को कम आँका गया हो। जैसे-जैसे औद्योगीकरण का विस्तार हुआ है तकनीकी के किसी भी क्षेत्र में श्रम की बलवत्ता तकनीकी के सम्मिश्रण के साथ सफलता की कुंजी रही है। किन्तु यदि परिवेश को देखा जाए तो पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर मानवीय मनोदशा एवं जीवन मूल्यों में आमूल चूल परिवर्तन की धारा देखने को मिली है। यही परिवर्तन समस्त संस्थानों की नींव को प्रभावित करने वाले कारकों के शोधन एवं परिशोधन का एक प्रमुख विषय बन गया है और आज इसमें निरंतर प्रयास जारी है।

इसी तारतम्य में, श्रम ही पूजा है के साथ-साथ मानव संसाधन की महत्ता व गुणवत्ता एक प्रमुख बिन्दु है जो प्रत्येक संस्थान की मज़बूत नींव और निरंतर सफलता की आधारशीला है। इसी क्रम में नालको भी अनवरत अग्रसर है और समय के बदलाव के अनुसार प्रयासरत है। विश्व में मानव संसाधन की गुणवत्ता पर समय-समय पर होने वाली गोष्ठियाँ ही आज के आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता को प्रमाणित करती हैं। इसी क्रम में मेरे विचार में जिन क्षेत्रों / बिन्दुओं पर अधिक ज़ोर दिया जा सकता है वह निम्नलिखित है:

श्रेष्ठ जीवन मूल्यों / मानदंडों के प्रति जागरूकता: यदि देखा जाए तो हम में से प्रत्येक जन की यही राय होगी कि पुराना समय और पुराने लोग बड़े अच्छे और शांति सम्पन्न थे लेकिन यदि शोध किया जाए तो ऐसा इसलिए था क्योंकि उस समय शांति , प्रेम , संतोष, भाईचारा, एकता और सम्बन्धों की प्रागढ़ता पर विशेष ज़ोर दिया जाता था क्योंकि यह सभी बिन्दु जीवन के स्थापित मानदंड थे। लेकिन समय के बदलाव की धारा हमें इनसे दूर असंतोष, अशांति, लालसा एवं नकारात्मक प्रतिस्पर्धा की ओर ले गई जिस कारण हमारे निजी जीवन की कमियों का प्रभाव हमारे कार्यक्षेत्र में भी प्रतिबिम्बित होने लगा परिणामस्वरूप यह एक कुचक्र बनकर रह गया जिसे तोड़ना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

मानव का अस्तित्व उसके अंदर सन्निहित जीवन मूल्यों से ही है जो कि उसका मार्गदर्शन उस प्रकाश स्तम्भ की तरह कर सकते हैं; जिससे कि समुद्र में भटके हुए एक जहाज को प्रकाश स्तंभ का सहारा होता है। अतः कार्मिकों को ऐसे कार्यक्रमों / गोष्ठियों में सम्मिलित किया जाए जिनसे उन्हें खोए हुए जीवन मूल्यों द्वारा पथ प्रदर्शन एवं ऊर्जा मिले। लेकिन यह कहना जितना सरल है उतना ही कठिन इसका अनुपालन है क्योंकि एक दो दिवसीय कार्यक्रम के बाद इसका जीवन में प्रयोग ही एक चुनौती है। अतः समय-प्रतिसमय जिस तरह हम उत्पादन एवं तकनीकी क्षेत्र में उच्च प्रदर्शन करनेवाले कर्मचारी / अधिकारी को अनुशंसित करते हैं उसी प्रकार अपने कार्यक्षेत्र में उच्च मानदंडों का अनुपालन तथा क्रियान्वयन करनेवाले कर्मचारी/अधिकारी की भी अनुशंसा एवं सम्मान होना चाहिए, जिससे सभी को प्रेरणा एवं बल मिले। इस तरह के प्रयासों के दूरगामी सकारात्मक व अपेक्षित परिणाम देखने को मिलेंगे।

संस्थान एक पारिवार, कर्मचारी/ अधिकारी पारिवारिक सदस्य :

जैसे हम आज के समय में सर्वाधिक महत्व अपने निजी परिवार एवं संबंधियों को देते हैं उसी प्रकार का संबंध संस्थान से कैसे जुड़ें, यह विचार और भाव हमारे मन में होना चाहिए। नालको हमारा कार्यक्षेत्र है, हम एक परिवार हैं; हम समूह भावना के साथ कार्य करते हैं। **इस परिवार का सदस्य होना गर्व की बात है** की भावना ही हमें ऊर्जा से भर देती है। अपनेपन की भावना तो एक जानवर को प्रिय बना सकती है और मानव संसाधन की कुशलता की कुंजी तो भावनात्मक परिवर्तन में ही है जो कि अपनेपन की भावना में निहित है। संस्थान की प्रगति ही हमारी एवं राष्ट्र की प्रगति का

आधार है, ऐसी वृत्ति एवं दृष्टि जगाने का अथक प्रयास हम सभी के मध्य हर स्तर पर होना चाहिए, चाहे वह वार्तालाप के माध्यम से हो या गोष्ठियों के माध्यम से हो या नाटकीय मंचों से हो या फिर हमारे कर्मचारी/अधिकारी गण के प्रति नीतियों के माध्यम से हो। यदि इस बिन्दु को विधिवत हल कर दिया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति, व्यक्ति विशेष होगा और उनकी कार्यकुशलता अप्रतीम।

कर्मचारी/अधिकारी का तकनीकी विकास तकनीकी कुशलता के आधार पर हो:

हीरे भी कोयले की खान में दबे हुए होते हैं, उनकी खोज एवं तराशने की कला ही उन्हें जग में स्थापित करती है और उसके बाद उनकी चमक ही उनका परिचय देती है। इसी क्रम में योग्यता और कुशलता को निखारने में चयन की एक बड़ी भूमिका होती है जिसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। ऐसे अनेक कार्मिक हो सकते हैं जिनकी रूचि के अनुसार उनका कार्यक्षेत्र या उन्हें प्रदत्त ज़िम्मेदारी ना हो वरन वे अन्य क्षेत्र में अधिक व प्रभावी योगदान दे सकते हैं । अतः कार्यक्षेत्र एवं उत्तरदायित्व का वर्गीकरण और उसके उपरांत उनका यथोचित विकास संस्थान की उन्नति में एक बहुत बड़ी भूमिका निभा सकती है। इस चयन एवं तदुपरान्त तकनीकी विकास में पारदर्शिता एवं दूरदर्शता का एक जौहरी के समकक्ष महत्व व योगदान होता है ।

मानव संसाधन विकास का सशक्तिकरण:

यदि देखा जाए तो वैश्विक स्तर पर हर बड़े या छोटे संस्थान की सफलता के साथ-साथ उनके पतन का कारण प्रमुखतः उनके मानव संसाधन विकास विभाग की दक्षता एवं संरचना ही होती है। इस कथन का तात्पर्य यह नहीं हो सकता कि मानव संसाधान विकास विभाग एक सत्ता है, जिसका दुरूपयोग किया जाए। वरन यह अपने आप में एक संस्था है जो एक कुशल कुम्हार की भांति कच्ची मिट्टी के घड़े को सँवारे और उसे पक्का रूप प्रदान करे। देखा गया है कि संस्थान मानव संसाधन को एक संसाधन न मानकर एक संख्या मात्र मानने की गलती करते हैं । यही विचारधारा पतन का कारण है। मानव संसाधन किसी भी संस्थान की अमूल्य निधि है जिसे सहेज कर रखना और निखारना मानव संसाधन विकास विभाग का उत्तरदायित्व होता है और इसी कारण इस विभाग को सशक्त बनाने का भरसक प्रयत्न होना चाहिए जो कि हर कालखंड में अनिवार्य एवं प्रासंगिक है। प्रत्येक कार्मिक के सुख-दुःख का साथी जैसे पारिवारिक सदस्य या मित्र होता है उसी प्रकार मानव संसाधन विकास विभाग एक अद्वितीय जिम्मेवारी का वहन करता है। इसलिए दूरगामी और फलीभूत होनेवाले परिणामों हेतु मानव संसाधन विकास विभाग को सशक्त करना नितांत अनिवार्य है।

इस तरह हम सभी आपस में एक दूसरे के पक्षों, विचारों को एक सूत्र में पिरोते हुए नालको की सफलता की श्रेष्ठ माला के मनके तभी बन सकते हैं जब प्रत्येक को अपने से अपेक्षित उत्तरदायित्व का पूरा-पूरा और यथार्थ ज्ञान हो। जिसके पश्चात कार्य निष्पादन और संस्थान की सफलता सुनिश्चित हो जाती है। यह कार्य व्यवहार सभी के लिए प्रेरणा दायक होता है जिसे अपना कर देश की प्रगति के मार्ग प्रशस्त होते हैं।

वरिष्ठ प्रबंधक (रसायन)
उत्पादन विभाग, एल्यूमिना परिशोधन
दामनजोड़ी

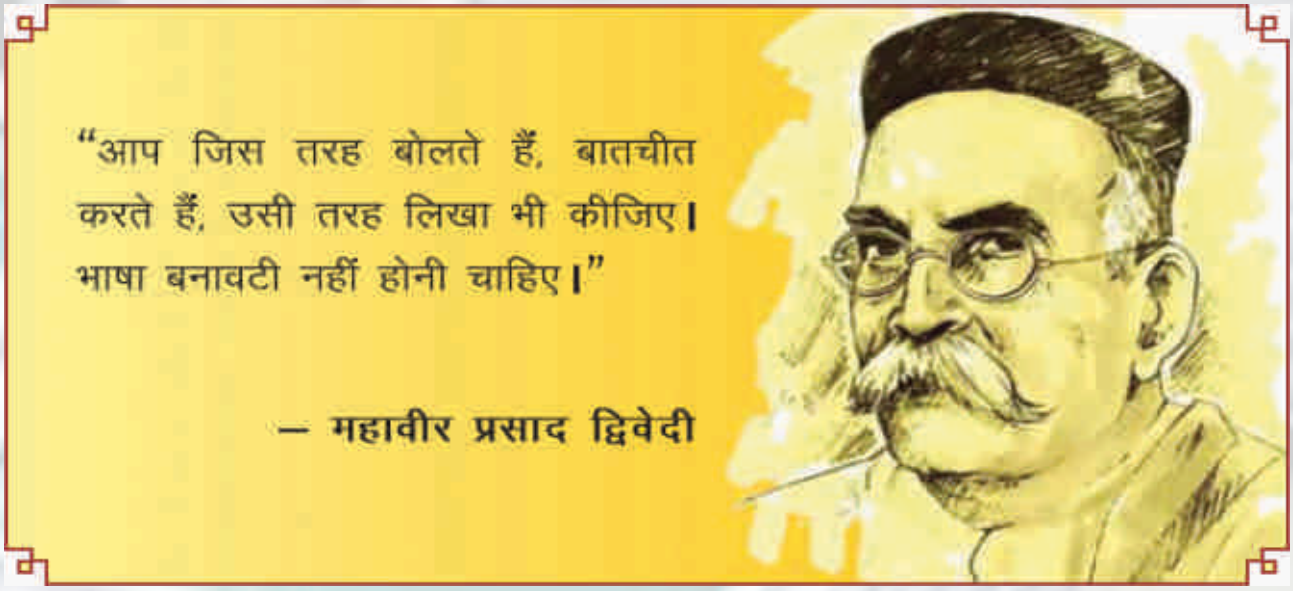

नालको के बढ़ते कदम और अपार संभावनाएँ

अंजन कुमार महतो

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लि. (नालको) खान मंत्रालय के अधीन एक नवरत्न लोक उद्यम है। कंपनी एक समूह 'ए' सीपीएसई है, जिसके पास खनन, धातु और बिजली में एकीकृत और विविध परिचालन है। नालको पूर्वी भारत के औद्योगिक मानचित्र में एक अग्रणी नाम है। नालको देश के सबसे बड़े एकीकृत, बॉक्साइट-एल्यूमिना- एल्यूमिनियम पावर कॉम्पलेक्स में से एक है। क्षमता उपयोग, प्रौद्योगिकी प्रयोग, गुणवत्ता आश्वासन, निर्यात प्रदर्शन और मुनाफे में अपने सुसंगत ट्रैक रिकार्ड के साथ नालको भारत की औद्योगिक क्षमता का उज्ज्वल उदाहरण है। नालको के पास यह क्षमता है कि **वह कुछ रणनीति के साथ एक अग्रणी महारत्न बन सकता है**।

आइए जाने महारत्न क्या होते हैं, सरकार द्वारा इस टाइटल की स्थापना 2009 में की गई थी। जिसका उद्देश्य बड़े सार्वजनिक क्षेत्र में केंद्रीय उपक्रमों को अपने कारोबार का विस्तार करने तथा विश्व की बड़ी कंपनी के रूपे में उभरने में समर्थ बनाना है। आज के समय में कोई भी महारत्न कंपनी किसी प्रोजेक्ट में अपनी कुल कीमत का 15 प्रतिशत निवेश का निर्णय स्वयं ले सकती है। महारत्न कंपनी का दर्जा ऐसी कंपनियों को दिया जाता है जो न्यूनतम पब्लिक होल्डिंग के साथ स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट हो और नवरत्न का दर्जा प्राप्त हो। विगत तीन वर्षों में औसत सलाना शुद्ध संपत्ति 15000 करोड़ रूपए से ज्यादा और औसत सलाना कारोबार 25000 करोड़ रु से ज्यादा होनी चाहिए। इसके साथ ही कर अदायगी के बाद पिछले तीन सालों के दौरान औसत सलाना शुद्ध लाभ 5000 करोड़ से ज्यादा होना चाहिए। वैश्विक स्तर पर उपस्थिति होना भी एक आवश्यक पहलु है। वर्तमान में भारत में 10 महारत्न कंपनियाँ हैं। नालको जैसे एक प्रतिष्ठित नवरत्न कंपनी को एक सुनियोजित रणनीति के साथ चलने पर महारत्न कंपनी बनने के लिए ज्यादा समय नहीं लगेगा।

इसी क्रम में, लगातार विकसित हो रहे बाजार की चुनौतियों का सामना करने और कंपनी को एक स्थायी विकास की स्थिति में लाने के लिए, एक नई निगम योजना बनाई गई है। जिसे तीन साल की कार्य योजना, 7 साल की रणनीति और एक प्रीमियम तथा एकीकृत कंपनी होने के लिए 15 साल के लक्ष्य के साथ तैयार किया गया है। घरेलु और वैश्विक खनन में उपस्थिति एवं धातु और उर्जा में विस्तारीकरण तथा 2032 तक राजस्व और लाभ में कई गुना वृद्धि के लिए निगम ने एक रोडमैप तैयार किया है। कंपनी ब्राउन फील्ड और ग्रीनफील्ड विस्तार परियोजनाओं के लिए अपनी व्यापक योजनाओं के साथ आगे बढ़ रही है। जिसमें दामनजोड़ी (ब्राउनफील्ड) में मौजूदा एल्यूमिना रिफाइनरी में 1 एमटीपीए क्षमता की पाँचवी स्ट्रीम रिफाइनरी परियोजना शामिल है। पोटांगी बॉक्साइट खानों का विकास, उत्कल डी और ई कोयला खानों का विकास एवं 5 लाख टीपीए ब्राउनफील्ड स्मेल्टर्स की स्थापना और 1400 मेगावाट कैप्टिव पावर प्लांट की स्थापना ओड़िशा में होनी है।

नालको एक उत्तरदायी कार्पोरेट के रूप में अक्षय उर्जा को सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के लिए संरेखित कर रहा है। इसी दिशा में कंपनी ने पहले ही 198 मेगावाट पवन उर्जा संयंत्रों को चालू कर दिया है और आगे 25 मेगावाट पवन उर्जा संयंत्र पाइपलाइन में है।

कंपनी ओड़िशा के औद्योगिक मानचित्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाने का बीड़ा उठा रही है। कंपनी ने एल्यूमिनियम उद्योग से संबंधित सहायक, अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए ओड़िशा इंडस्ट्रीयल इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलप्मेंट कॉर्पोरेशन (आईईडीओ) के साथ अनुगुळ एल्यूमिनियम पार्क प्राइवेट लि. (एएपीपीएल) नाम से संयुक्त उद्यम की कंपनी बनाया है। इसके साथ ही कंपनी संयुक्त उद्यम के अंतर्गत गुजरात एल्कलीज एंड केमिकल लि.(जीएसीएल) के साथ कॉस्टिक सोडा प्लांट और एनआईएनएल के साथ ओड़िशा में सी.टी.पिच (C T Pitch) संयंत्र की स्थापना कर रही है। कंपनी ने रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उच्च श्रेणी एल्यूमिनियम मिश्र धातु बनाने के लिए मिधानी (MIDHANI) के साथ संयुक्त उद्यम कंपनी का गठन किया है। जिसका

नाम उत्कर्ष एल्यूमिनियम धातु लि. (UADNL) है। विदेशी स्थान पर रणनीतिक खनिज संपत्ति प्राप्त करने और भारत में आपूर्ति करने के लिए नालको ने एचसीएल और एमईसीएल के साथ खनिज विदेश इंडिया लि. (काबिल) नामक एक संयुक्त उद्यम कंपनी का गठन किया है।

कंपनी, सफलता की सीढ़ी चढ़ते हुए, न केवल उत्कृष्ट उत्पादन बल्कि एक उत्तरदायी कॉर्पोरेट के रूप में अपने परिचालन क्षेत्रों में सामाजिक निगम उत्तरदायी गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक – आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। विस्थापित परिवारों का पुनर्वास, रोजगार, आय सृजन, स्वास्थ्य देखभाल और स्थानीय लागों की स्वच्छता, शिक्षा और कौशल विकास, सुरक्षित पेयजल प्रदान करना, बुनियादी ढ़ाँचे का विकास, प्रदूषण नियंत्रण, पर्यावरण उपाय, ग्रामीण विकास, कला, शिल्प और संस्कृति का संवर्धन और विभिन्न मानवीय अच्छे कार्यों ने नालको को कॉर्पोरेट जगत में गौरव का स्थान दिलाया है। राष्ट्रीय निगम सामाजिक उत्तरदायित्व पुरस्कार 2018 में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए 'माननीय उल्लेख' के साथ मान्यता प्राप्त हुई है।

परिधि क्षेत्रों को बेहतर जीवन प्रदान करने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की पहल के साथ कंपनी ने कई महत्वपूर्ण महत्वाकांक्षी परियोजनाएँ ली हैं। इसके उल्लेखनीय प्रयासों में इन्द्रधनुष योजना शामिल है, यहाँ कंपनी ने माओवादियों से प्रभावित दामनजोड़ी क्षेत्र के 1003 आदिवासी बच्चों को प्रायोजित किया है और उन्हें 3 प्रतिष्ठित आवासीय विद्यालयों में शिक्षा प्रदान की है। अनुगुळ और दामनजोड़ी सेक्टर में बीपीएल परिवारों की 603 मेधावी छात्राओं को **"नालको की लाड़ली"** योजना के तहत वित्तीय सहायता की है।

स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को एक महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में मान्यता देते हुए नालको अपने संयंत्रों के परिधीय गाँवों में मोबाइल हेल्थ यूनीट और एक ओपीडी का संचालन कर रही है। इसके द्वारा वित्त वर्ष 2019-20 में लगभग 1.3 लाख रोगियों का इलाज मुफ्त में स्वतंत्र रूप से किया गया। कंपनी ने अनुगुळ में एक माध्यमिक आधुनिक नेत्र देखभाल अस्पताल की स्थापना की है और एम्स, भुवनेश्वर में 600 बेड वाले नाइट शेल्टर के लिए काम कर रही है, जो कि इनडोर और ओपीडी के मरीजों के लिए दीर्घकालिक उपचार का लाभ प्रदान करेगी।

देश में कुशल जनशक्ति के बहुगुणा मांग के बढ़ने के चलते कंपनी बेरोजगार युवाओं को रिटेल, हेल्थकेयर, ब्यूटिशियनस सिलाई मशीन परिचालन जैसे विभिन्न मांग क्षेत्रों में प्रशिक्षित भागीदारों के साथ कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। इस कोरोना काल में जहाँ भारत एवं पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था डगमगा गई है। वैसी स्थिति में नालको ने अपने उत्पादन को बनाए रखा और भारत एवं राज्य सरकार को हर प्रकार सहायता की है। कंपनी ने ओड़िशा के नबरंगपुर में 24 घंटे की डॉयगोनॉस्टिक सुविधा के साथ 10 बेड के आईसीयू और ऑक्सीमेट्रो के साथ 200 बेड का एक्सक्लूसिव कोविड – 19 अस्पताल दिया है। यह अस्पताल आदिवासी बहुल जिले नबरंगपुर और दक्षिणी ओड़िशा के अन्य निकटवर्ती जिलों अर्थात रायगड़ा, कोरापुट, मलकानगिरी और कालाहांड़ी की आवश्कताओं को पूरा करेगा।

नालको अपनी विकासशील योजनाओं के साथ एल्यूमिना, एल्यूमिनियम, उर्जा क्षत्रों में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में तेजी से आगे बढ़ रहा है। नालको के स्थापना दिवस के अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी ने कहा है कि, अगले 7-8 वर्षों में 30,000 करोड़ रूपए का अनुमानित निवेश होगा और नालको का विस्तार होगा। इसमें रिफाइनरी के विस्तार में एक मिलियन टन की क्षमता शामिल होगी, जिसमें 3.5 मिलियन टन क्षमता की पोटांगी बॉक्साइट खदानें और उत्कल डी एवं ई कोल ब्लॉक का परिचालन होगा। इसके अलावा, ओड़िशा के अनुगुळ में ब्राउनफील्ड विस्तार के माध्यम से एक और 1200 मेगावाट कैप्टिव पावर प्लांट और एल्यूमिनियम बनाने की क्षमता में 0.5मिलियन टन की वृद्धि उस विकास योजना में परिकल्पित की गई है। यह स्थिरता और प्रतिस्पर्धा के लिए कंपनी की मदद करेगी। इसके अलावा एल्यूमिनियम उद्योग सभी धातुओं में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्र में से एक है और निकट भविष्य में भारी निवेश आकर्षित करने की क्षमता रखता है।

इस दिशा में आगे बढ़ते हुए नालको कंपनी बहुत जल्द ही भारत सरकार द्वारा तय किये गए मापदंड़ों को पूरा कर लेगा और वो दिन दूर नहीं जब नालको एक अग्रणी महारत्न कपनी बनने में सफल हो जाएगा और न केवल भारतवर्ष में बल्कि पूरे विश्व में भारत का ध्वज लहराएगा।

वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक), संचालन विभाग
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुगुळ

जीवन और समुदायों को बदलने के लिए प्रतिबद्धः निगम सामाजिक उत्तरदायित्व

राजश्री मिश्र

किसी भी संगठन के अंदर, निगम सामाजिक उत्तरदायित्व व्यवसाय के लिए एक स्थापित रणनीतिक दृष्टिकोण है, हालांकि इसका अर्थ अभी भी बहस में है। इस चर्चा में, हम इस पर एक नज़र डालेंगे कि संकट के समय में निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) परिवर्तन/आवश्यकता के प्रति कैसे पहल करता है। निगम सामाजिक उत्तरदायित्व अर्थव्यवस्था और उस समुदाय का हिस्सा है जहाँ यह संचालित होता है, और जिससे यह गतिशीलता और प्रभाव प्राप्त करता है। यह दोतरफा संप्रेषण है। जिस तरह समुदाय कंपनी को प्रभावित करता है, उसी तरह कंपनी उस अर्थव्यवस्था और समाज को भी प्रभावित करने में सक्षम है जहाँ वह काम करती है। इसका मतलब है कि किसी कंपनी को बाहरी दुनिया से पूरी तरह से अलग करना असंभव है। वास्तव में, इसके व्यावसायिक विकल्पों का समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर, इसके कर्मचारियों से लेकर पर्यावरण तक पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

इसके आलोक में, ग्राहक, कर्मचारी और आम जनता कंपनियों से उस सिद्धांत(पहल) को लागू करने की अपेक्षा करती है जो कॉर्पोरेट मूल्यों और कौशल के अनुरूप हों, जिससे पूरा समुदाय लाभान्वित हो सके। यह उस महत्व को रेखांकित करता है जिसे हम निगम सामाजिक उत्तरदायित्व कहते हैं।

निगम सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा

सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा 1953 में हॉवर्ड बोवेन की एक पुस्तक, "सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटीज ऑफ द बिजनेसमैन" में है। इस पुस्तक में, लेखक एक महत्वपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत करता है: एक कंपनी और उसके शीर्षतम अधिकारी की समाज के प्रति क्या जिम्मेदारी है? (रिसर्चगेट.नेट)।

लाभ वह लक्ष्य है जो अधिकांश कंपनियों की गतिविधियों को संचालित करता है, जिसके द्वारा अन्य जिम्मेदारियों का पूरा किया जाता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी खुश रहें) एशिया के सबसे बड़े एकीकृत एल्यूमिनियम कॉम्प्लेक्स, नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको) के लिए मार्गदर्शक भावना है, जिसे 1981 में खान मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के रूप में स्थापित किया गया था।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों से प्रेरणा लेते हुए - "जब भी आप संदेह में हों ... सबसे गरीब और सबसे कमजोर व्यक्ति का चेहरा याद करें जिसे आपने देखा होगा और अपने आप से पूछें कि क्या आपका यह कदम उस व्यक्ति के लिए उपयोगी होगा?" नालको अपनी प्रभावशाली सीएसआर पहल के माध्यम से जीवन और समुदायों को बदलने का प्रयास कर रहा है।

निगम सामाजिक उत्तरदायित्व उद्देश्य और क्षेत्र

नालको की सीएसआर परियोजनाएँ बुनियादी ढाँचे के विकास, स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता, पेयजल, शिक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता, खेल, कला और संस्कृति, सामुदायिक देखभाल, आजीविका आदि पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

जिनका आधार नालको के सीएसआर विंग - नालको फाउंडेशन द्वारा समुदाय की आवश्यकता का अनुमानित मूल्यांकन है। इस क्रम में परिधीय विकास गतिविधियों को सरकार के माध्यम से लागू किया गया। ओड़िशा के राजस्व मंडल आयुक्त की अध्यक्षता में "पुनर्वास और परिधीय विकास सलाहकार समिति (RPDAC)" का गठन किया गया। 1990-2011 की अवधि के लिए, नालको ने 2490.69 लाख रुपये परिधीय विकास परियोजनाओं पर ज्यादातर अनुगुळ और दामनजोड़ी में खर्च किए हैं। 2014-15 से, नालको अपने औसत शुद्ध लाभ का 2% कई सीएसआर परियोजनाओं पर खर्च कर रहा है।

एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवसाय उद्यम के रूप में, एल्यूमिनियम प्रमुख अपने हितधारकों की भलाई और आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय सतत विकास में योगदान देता रहा है। कंपनी की सीएसआर गतिविधियों के

सुचारू कार्यान्वयन के लिए 2010 में भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत 'नालको फाउंडेशन' स्थापित किया गया।

सीएसआर नीति

नालको हमेशा से सामाजिक कार्यों के लिए प्रतिबद्ध रही है और अपने शुद्ध लाभ का 2% सीएसआर गतिविधियों के लिए निर्धारित करती है। वास्तव में, समाज के वंचित वर्ग के प्रति इसकी प्रतिबद्धता ने संगठन को **'नालको फाउंडेशन'** के रूप में एक समर्पित सीएसआर विंग बनाने के लिए प्रेरित किया है। सामाजिक पहल को मजबूत करने के लिए एकनिष्ठ संगठन - नालको फाउंडेशन 2010 से काम कर रहा है। हालांकि, नालको 1981 में अपनी स्थापना के बाद से परिधीय विकास में पर्याप्त काम कर रहा है।

सामान्य समय में कंपनियों का योगदान

नालको की सीएसआर पहल मुख्य रूप से इसके संयंत्रों के परिधीय क्षेत्रों/प्रत्यक्ष प्रभाव क्षेत्रों में की जाती है और कुछ को पूरे भारत में लागू किया जाता है। अनुशंसित सीएसआर परियोजनाओं को सीएसआर समिति के समक्ष रखा जाता है और अनुमोदन पर, उन्हें सीधे नालको, नालको फाउंडेशन, भारत सरकार या विभिन्न एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों, जिनका प्रमाणित ट्रैक-रिकॉर्ड हो, जैसे - ट्रस्ट, संस्थान, फाउंडेशन, सोसाइटी, समुदाय-आधारित संगठन आदि के माध्यम से कार्यान्वित किया जाता है। इसके कुछ प्रमुख सीएसआर कार्यक्रमों में मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों (एमएचयू) के माध्यम से हर साल एक लाख से अधिक ग्रामिणों का इलाज करना शामिल है, जो अनुगुळ में 43 गाँवों और ओड़िशा में दामनजोडी और पोट्टांगी क्षेत्र के 204 गाँवों को सेवा प्रदान करते हैं। इसके साथ स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) गाँवों का विकास, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तरजीह पर नालको की लाड़ली जैसे कार्यक्रम, विकलांग व्यक्तियों का समर्थन करना, आसपास के गाँवों के लोगों का कौशल निर्माण, खेल को बढ़ावा देना और सड़क आदि का निर्माण कर बुनियादी सुविधाएँ(सड़क, पानी, बिजली आदि-आदि) प्रदान करना नालको का ध्येय है। इन कार्यों का निगरानी और मूल्यांकन समय-समय पर पहचाने गए प्रमुख प्रदर्शक संकेतकों की मदद से किया जाता है और प्रत्येक सीएसआर परियोजना के विवरण अर्थात आधारभूत डेटा, लक्षित लाभार्थियों, मध्यवर्ती कार्य-योजना, लक्षित परिणाम, पूर्णता अनुसूची, निधि उपयोग, प्रभाव मूल्यांकन आदि में निरंतर सुधार का भी प्रयास किया जाता रहता है ताकि इसे अत्यधिक प्रभावी और प्रक्रिया को मजबूत किया जा सके।

कोविड -19: संकट के समय में कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी

यदि आप सामान्य अवधि के दौरान कंपनियों से इस तरह की ठोस कार्रवाई की उम्मीद करते हैं, तो संकट के समय क्या होता है?

कोविड -19 के मद्देनजर दुनिया भर की कंपनियाँ अपने समुदायों की मदद के लिए जुटी हैं। कुछ कंपनियों ने स्वास्थ्य सुविधाओं या स्थानीय सरकारों को वित्तीय सहयोग दिया है, कुछ ने वायरस से लड़ने के लिए उत्पाद और मशीनरी खरीदी है, अन्य ने अपनी उत्पादन श्रृंखला को ऐसे उपकरण बनाने के लिए परिवर्तित किया है जो डॉक्टरों और नर्सों के लिए उपयोगी हैं, जैसे गाउन, मास्क, और हैंड सैनिटाइज़र आदि।

निगम सामाजिक उत्तरदायित्व और समुदाय

नि.सा.उ. एक रणनीतिक प्रबंधन प्रणाली है जो समुदाय और निगम दोनों ही के लिए जीत की संभावनाएँ प्रदान करता है। एक फर्म "समुदाय" के एक बाहरी हितधारक समूह को किसी भी सांप्रदायिक लक्षणों जैसे इतिहास, धर्म, संस्कृति, भौगोलिक क्षेत्र, और संबंधित प्राणियों के आधार पर पूरे इलाके या दुनिया भर में फर्म की आपूर्ति श्रृंखलाओं पर आधारित किया जा सकता है। जो परस्पर निर्णय से प्रेषित एवं प्रभावित होता है। सामुदायिक दबाव किसी भी संगठन के नि.सा.उ नीति और इसके कार्यान्वयन रणनीतियों को प्रभावित कर सकता है। एक समुदाय विशेष में संचालित किसी भी संगठन से, उस समुदाय को उम्मीद होती है कि वह संगठन उस समुदाय को अपने सामाजिक पहल के माध्यम से कई लाभ प्रदान करे। इस क्रम में निगम सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से संगठन का उद्देश्य समुदाय और समाद को समग्र रूप से सहयोग देना, विकसित एवं समृद्ध करना होता है।

कोविड -19 महामारी आपदा ने फिर से सामाजिक असमानताओं को सामुदायिक धारणाओं में जकड़ लिया है। हाल ही में लाखों बेरोजगारों में असमानता को देखा जा सकता था। दुनिया भर में नए पैदा हुए सामाजिक संकटों का भविष्य की सामाजिक स्थिरता पर प्रभाव पड़ता है, और आर्थिक विकास सांप्रदायिक जीवन, शिक्षा, मानव विकास और स्वास्थ्य पर अधिक व्यापक रूप से विनाशकारी प्रभाव

डाल सकता है। कोविड-19 के प्रकोप ने अंततः सांप्रदायिक जीवन को प्रभावित किया, और दुनिया भर के समुदाय इसके बिगड़ने के कारण अपने दैनिक जीवन का नेतृत्व करने के लिए बहुत कमजोर हैं। लोगों के स्वास्थ्य, आय, आश्रय और अन्य जीवन लक्ष्यों को अब कोविड-19 हमलों से उत्पन्न कई और जोखिमों एवं अनिश्चितताओं से चुनौती प्राप्त हुई है। इस प्रकार, इस कठिन समय में कंपनियों का नैतिक कर्तव्य है कि, परोपकारी कार्यों के माध्यम से अपने सबसे अच्छे पड़ोसियों (समुदायों) की सहायता करें (जैसे, भूखे को खाना खिलाना, चिकित्सा उपकरण दान करना, सूचना साझा करना, नकद दान, सलाह आदि)।

संपूर्णता में नि.सा.उ और समाज

यह अब पूर्णतः स्पष्ट है कि कोविड – 19 महामारी ने प्रभावित मरीजों को उपचार प्राप्त करने अथवा विस्थापित लागों के पुनर्वास एवं रोजगार प्रत्येक स्तर पर जकड़ रखा है। आज की स्थिति में कितने ही आजीविका रहित होकर संघर्ष करने को शापित हैं। तथापि नि.सा.उ द्वारा निरंतर प्रयास किया जा रहा है कि इस समस्या को अधिकतम दूर किया जा सके और परिस्थिति को सामान्य।

परस्पर सहयोग के द्वारा समाज के अनगिनत समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इस संदर्भ में परोपकारी नि.सा.उ एक संयुक्त पड़ाव के रूप में इस स्थिति से निबटने और इस महामारी के दुःप्रभाव को बहुत हद तक कम करने में सक्षम है। साथ ही इस प्रयास से लंबी अवधि के सामाजिक आवश्यकताओं को पहचान कर उनका निदान भी किया जा सकता है। इस रूप में कंपनियाँ समाज को पुनः सक्रीय करने और कोविड- 1 9 के प्रभाव से उत्पन्न अपने हितधारकों की आवश्यकताओं को पहचान कर समाधान प्रस्तुत करते हुए महामारी के नकारात्मक प्रभाव को कम करने का उपक्रम लगातार कर रही हैं। अपने वैश्विक व्यावसायिक परिवेश में संगठनों द्वारा समाज एवं हितधारकों के लिए किया जाने वाला पहल उन सबके लिए आधारभूत संबल एवं नए जीवन की राह प्रमाणित हो रहा है। जिसमें दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएँ प्रदान करने के साथ औषधि-आजिविका-मौद्रिक सहयोग भी शामिल है।

दुनिया भर में लोग कोविड-19 महामारी के तेजी से प्रसार के साथ एक अप्रत्याशित समय से गुजर रहे हैं जो भय और अनिश्चितताओं से भरा है। इस समय प्रमुख प्राथमिकता अच्छे स्वास्थ्य के साथ लोगों के जीवन की सुरक्षा है। जबकि कोविड-19 महामारी का वैश्विक प्रभाव हर दिन विकसित हो रहा है, लोगों को बचाने और पृथ्वी को पहले से कहीं अधिक सुंदर बनाने के लिए एक साथ सामाजिक दूरी और स्वास्थ्य पेशेवरों के दिशानिर्देशों का पालन आवश्यक है। इस समय, फर्मों को न केवल वित्तीय प्रदर्शन बल्कि समाज के लाभ और अपने हितधारकों, जैसे भागीदारों, परिवारों, कर्मचारियों, ग्राहकों और समुदायों के कल्याण के लिए भी देखना चाहिए।

सहायक परियोजना प्रबंधक
नालको फाउंडेशन
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

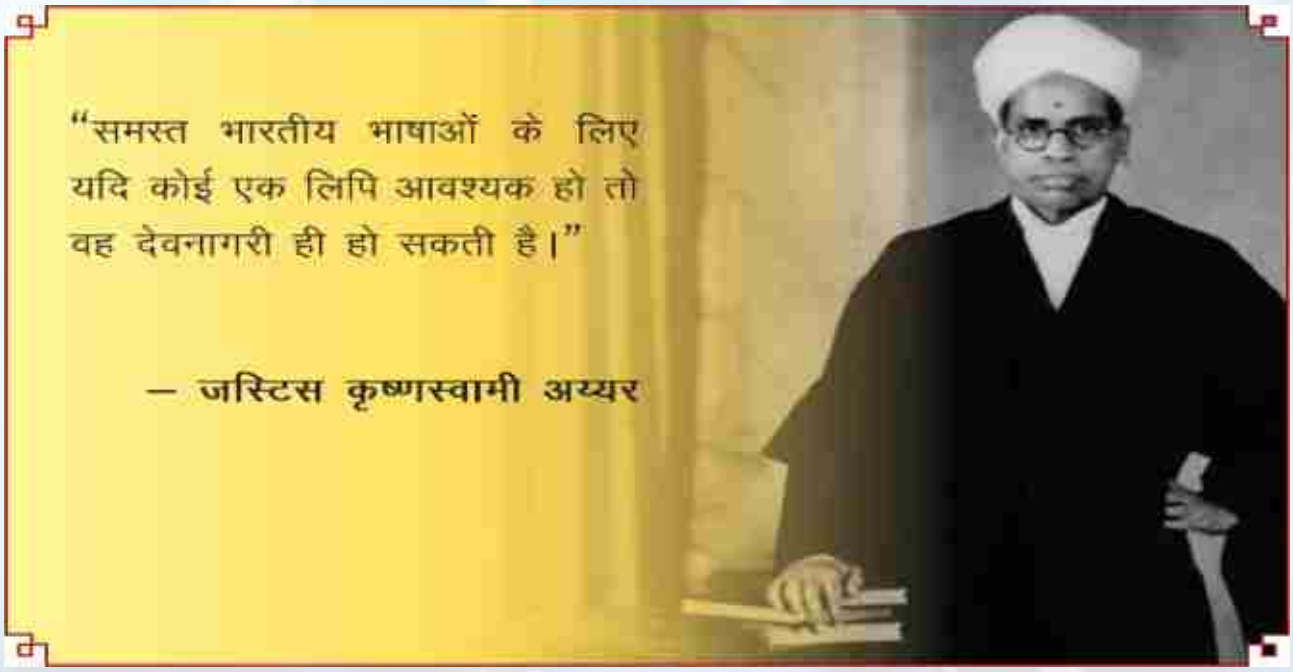

इंटरनेट का महत्व

रोशनी कुमारी

इंटरनेट शब्द को आज सभी लोग जानते हैं। बच्चें हों या बड़े, सभी इसका उपयोग करना अच्छी तरह से जानते हैं। अगर सही अर्थों में देखा जाये तो आज इंटरनेट हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। इंटरनेट ने आज हमारी बहुत सारी मुश्किलों को आसान कर दिया है, जिसकी वजह से हमारा काफी काम आसानी से हो जाता है।

इंटरनेट का जन्म सन 1969 में किया गया था। इसका सबसे पहले प्रयोग सन 1969 में अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग द्वारा एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी नेटवर्क का गुप्त आंकड़ों और सूचनाओं को दूर दराज के विभिन्न राज्यों तक भेजने एवं प्राप्त करने में किया गया था। हमारे भारत में इंटरनेट 80 के दशक में आया था। धीरे-धीरे इंटरनेट के विकास के साथ इसके फायदे और महत्व हर क्षेत्र में दिखाई देने लगे और यह तकनीक पूरी दुनिया में इंटरनेट क्रांति के रूप में फ़ैल गया।

इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक श्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र, वीडियो आदि दुनिया के कोने तक पल भर में भेज और प्राप्त कर सकते हैं।

यह सन्देश भेजने और प्राप्त करने का सबसे सरल और सस्ता तरीका है। इंटरनेट के माध्यम से हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे हुए संबंधियों से बात कर सकते हैं, इसे इंटरनेट चैटिंग कहते हैं जिसकी वजह से फेसबुक और व्हाट्सएप्प बहुत अधिक प्रसिद्ध हो रहे हैं।

इंटरनेट के माध्यम से हम अपने विचारों और वस्तुओं का पूरी दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। यह विज्ञापन का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है। इंटरनेट के माध्यम से हम व्यापार भी कर सकते हैं।

इंटरनेट के माध्यम से हम नौकरी अथवा रोजगार पाने के लिए अपना बॉयोडाटा भी इंटरनेट पर डाल सकते हैं। वास्तव में इंटरनेट एक सार्वजनिक सुविधा है और इसका उपयोग कोई भी कर सकता है।

इंटरनेट की लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ रही है, इंटरनेट कनेक्शन धारक किसी भी समय, किसी भी विषय पर तत्काल इच्छित जानकारी प्राप्त कर सकता है।

आज के समय में इंटरनेट का उपयोग करके छात्र, वैज्ञानिक, व्यापारी, खिलाड़ी, तथा सरकारी विभाग अपनी आवश्यकता और रूचि के अनुसार सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

युवा वर्ग के लिए तो इंटरनेट ने ज्ञान और मनोरंजन के असंख्य द्वार खोल दिए हैं। ईमेल, टेली बैंकिंग, हवाई और रेल यात्रा के लिए अग्रिम टिकट खरीद, विभिन्न बिलों का भुगतान, ई-मार्केटिंग जैसी नई-नई सुविधाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध कराई जा रही हैं।

इंटरनेट का उपयोग करके अब हम घर बैठे निःशुल्क सीख सकते हैं और हमें कहीं जाने की भी जरुरत नहीं है और न ही अधिक पैसे खर्च करने की। अब इंटरनेट सेवा के बढ़ते चलन के माध्यम से ई-कॉमर्स और ई-मार्केटिंग कंपनियों ने सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी ख़त्म कर दी है।

इंटरनेट के प्रयोग में कुछ हानियाँ भी हैं, जैसे इंटरनेट का हद से ज्यादा प्रयोग करने से आपको मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है और सोशल मीडिया के ज़माने में लोग एक दूसरे से दूर होते जा रहे हैं । कई बार बच्चे ऑनलाइन गेम खेलते हुए पढ़ाई पर से ध्यान भटका देते हैं। वर्तमान में सभी कंपनियाँ, सरकारी दस्तावेज इत्यादि इंटरनेट पर ही हैं तो लीक होने का खतरा भी रहता है और काफी कंपनियों का हर साल डाटा चोरी होता है जिसके कारण करोड़ों रुपयों का नुकसान होता है।

इंटरनेट आज की दुनिया में हर किसी के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके कई फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं, किन्तु यह तो उपयोग करने वाले के ऊपर निर्भर करता है कि वह इंटरनेट को किस तरह से उपयोग करता है, जैसे चाकू से फल सब्जियाँ भी काटी जा सकती हैं और किसी का गला भी लेकिन इसमें चाकू का कुछ गुण या दोष नहीं होगा कि उसका उपयोग फल सब्जियाँ काटने में किया गया या कुछ और। उसी तरह से असीमित संभावनाओं से भरा इंटरनेट का उपयोग कैसे करना है, ये उपयोग करने वाले पर निर्भर है।

अर्द्धांगिनीः श्री चंद्र शेखर सोनी
उप प्रबंधक (सिस्टम)
एल्यूमिना परिशोधन, दामनजोड़ी

नालको: एक आदर्श परिवार

अमृता बसु

परिवार शब्द का सामान्य अर्थ होता है घर की एक छत के नीचे रहने वाले वे लोग जो रिश्ते-नाते के कारण आपस में जुड़े हुए हैं। उनका सुख-दुःख आदि सब कुछ साझा है। इस सामान्य दृष्टि के अतिरिक्त व्यापक दृष्टि से परिवार की स्वरुप और परिभाषा बतायी जाती है। जिस देश काल के समाज में हम रहते हैं, वह पूरा समाज भी हमारे परिवार के समान ही हुआ करता है, क्योंकि उस समाज में हम अपने रहन-सहन, खान-पान, सभ्यता-संस्कृति आदि की दृष्टि से समान व्यवहार करते हैं। सभी प्रकार के उत्सव और त्योहार भी समान रूप से मिल-जुलकर मनाते हैं। यहाँ पर जिस परिवार का उल्लेख किया जा रहा है, वह 'नालको' मानो एक घर की छत है ,तथा सभी कर्मचारी गण उस 'आदर्श परिवार' के सदस्य हैं।

एक ऐसा परिवार जिसका व्यवहार तथा परोपकार की भावना देश तथा देशवासियों के हित में है। जिसके सभी सदस्य एक दूसरे से माला में पिरोए हुए मोती की तरह जुड़े हुए हैं , इस परिवार के सभी सदस्यों की दृढ़ता एवं मनुष्यता की भावना केवल अपने परिवार के पालन-पोषण एवं उन्नति की ही नहीं बल्कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों में सबकी सहायता में निरंतर क्रियाशील रहती है। इस परिवार को ईश्वर की ओर से आशीर्वाद प्राप्त है। वह एक महत्वपूर्ण संयोग होता है।

इस संयोग को मणिकांचन के नाम से परिभाषित कर सकते हैं। इस परिवार के सभी सदस्य मणि में जड़े हुए कंचन के समान हैं, जो धैर्य, स्थिरता और साहस के साथ अपने प्रत्येक लक्ष्य-दायित्व की ओर अग्रसर रहते हैं। इसी प्रयास का प्रतिफल है कि नालको परिवार ने सर्वव्यापी महामारी के कठिन समय में संक्रमित सदस्यों के इलाज की समुचित व्यवस्था की एवं लॉकडाउन में सभी अपने घर पर सुरक्षित रहें और उनकी प्रतिदिन के प्रयोग होने वाली वस्तुओं के लिए बेहतर व्यवस्था की गई तथा चारों तरफ स्वच्छता का कड़ाई के साथ अनुपालन आदि किया जाता रहा।

पूरा परिवार सब कुछ सामान्य होने की ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है परंतु कोरोना वायरस की तीसरी लहर आने की आशंका से प्रत्येक सदस्य भयभीत भी हैं; किंतु किसी को भी इससे चिंतित नहीं होना है अपने स्वच्छता तथा सुरक्षा के नियमों का कड़ाई से पालन करना है, यह तो परीक्षा की घड़ी है; इसे धैर्य एवं साहस के साथ पार करना है । अपने निःस्वार्थ, परोपकारी, सहानुभूति, दृढ़ता के द्वारा अपने प्रदेश तथा देशवासियों की सहायता के लिए प्रगति के पथ पर अग्रसर होना है।

इस प्रकार मानव जीवन में मनुष्यता की भावना को सिद्ध करना है , ताकि प्रत्येक व्यक्ति इस परिवार की मिसाल दे, जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" से संचित और "परहित सरिस धर्म नहीं भाई" से पल्लवित है।

अर्धांगिनी- श्री सुगत आनन्द बसु
उप महाप्रबंधक (औद्योगिक अभियांत्रिकी)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

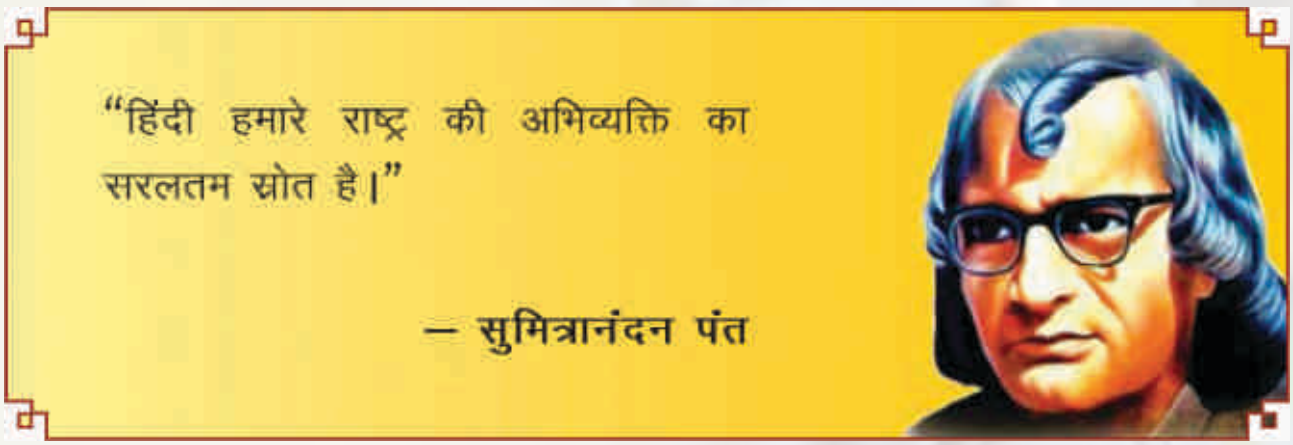

अकेला

सदाशिव सामन्तराय

शाम का अंधेरा पूरी तरह से राज की कालिमा में बदल चुका था, राकेश को पता ही नहीं चला था। शाम जब वो इस पार्क के एक कोने के सीमेंट के कुर्सी पर बैठा था। उसकी नजर सामने गेंदे के फूलों के बगीचे पर पड़ी थी। शाम के हौले-हौले हवा में सभी पौधे झूम रहे थे और उनके फूल मानों खुशी से एक दूसरे से टकरा रहे थे। ठीक वैसे ही जैसे एक क्रिकेट के मैच में विकेट लेने के बाद सारे खिलाड़ी गेंदबाज की हथेली से हथेली बजाकर खुशी को बाँटते हैं।

अंधेरा हो जाने की वजह से फूल भी बड़ी मुश्किल से दिख रहे थे। "साहब पार्क बंद होगा नौ बज गए हैं" वाचमैन ने उसे कहा!

अरे नौ बज गए हैं अचंभित होकर उसने घड़ी देखा तो वाकई नौ बज गए थे। यहाँ वह चार घंटे से बैठा था। क्रिकेट का जो दृश्य उसके सामने आया था, शायद उसके हालात से इसका दूर-दूर तक कोई वास्ता न था। खुशी तो दूर उसके लिए एक मुस्कुराहट भी नसीब न थी जिन्दगी मानों एक बंद पटे सुरंग की तरह अंधेरे में रास्ता ढूँढ रही थी।

पार्क के गेट से बाहर जाकर पास ही के एक बस स्टैड पर बैठ कर वो बस का इंतजार करने लगा। रह-रह कर घटती घटनाओं ने उसे फिर से सोच के बवंडर में धकेल दिया था।

दो साल पहले राकेश ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पास करके एक कंपनी ज्वाइन की थी, तीन महीने की ट्रेनिंग के बाद उसकी पोस्टिंग मेदिनीपुर के एक फैक्ट्री में हो गई थी। राकेश का घर उत्तरप्रदेश के बरेली में था, शुरू में तो इस नौकरी के लिए उसके परिवार वालों ने मना किया था और दूसरी नौकरी ढूढ़ने के लिए कहा था। बंगाल का माहौल जो कि दिन-ब-दिन राजनीति से भरता जा रहा था। इस स्थिति में नौकरी करने के लिए शायद कोई सहमत न था। कारण था कि राकेश जिस जाति का था, उसका पता चलते ही वह भी राजनीति के घेरे में आ जाता और उसके लिए काफी असुविधा हो सकती थी। पर राकेश ने सभी को यह कह कर मना कर दिया था कि, वो नौकरी उसके कैरियर के लिए काफी अच्छी थी। और आखिर में राकेश ने नौकरी ज्वाइन कर ली थी।

शुरू में कुछ दिन तो ठीक चले, पर धीरे-धीरे राकेश ने जाना कि दूसरे राज्य के लोगों के लिए एक तरह की नफरत लोगों में उभरकर सामने आ रही थी। पहले शांत भाव से फिर लोगों ने खुलेआम उसके काम-काज, हर सोच को रोकना शुरू कर दिया था। मुश्किल यह थी कि नीचे से लेकर ऊपर तक के ऑफिसर तक इस मुद्दे पर एक साथ हो जाते थे और अगर राकेश किसी भी मुद्दे पर विरोध करता तो एक साथ मिलकर उसके खिलाफ मोर्चा खोल देते थे। कुछ दिन तक तो राकेश सब संभालने की कोशिश करता रहा पर हालत दिन-ब-दिन बिगड़ने लगे थे, आए दिन की झिग-झिग से राकेश हारने लगा था। नौकरी वैसे काफी अच्छी थी। कंपनी के एमडी और वरिष्ठ अधिकारी काफी अच्छे थे। उसने इस समस्या का जिक्र भी उनके साथ किया था, पर वे जानकर भी कुछ सीधे-सीधे करने से लाचार थे। सिर्फ कहते "ट्राई टू मैनेज द सिचूएशन" पर बेचारे राकेश के लिए इसे मैनेज करना शायद मुश्किल होता चला जा रहा था। वह जगह ही ऐसी थी कि, उसका जान पहचान वाला वहाँ कोई भी न था।

पिछले पंद्रह दिन से प्लांट का यूनीयन बुरी तरह से उसके पीछे लग चुका था। उसके हर काम की शिकायत होने लगी थी। उसने प्रबंधन को सच्चाई बताई पर प्रबंधन भी शायद लाचार थी। एक दिन वह एमडी से भी मिला था, उन्होंने उससे सहानुभूति तो जताई पर बोले – "देखो राकेश, अगर स्थानीय प्रशासन का सपोर्ट नहीं मिला तो मैं भी कुछ नहीं कर सकता" एमडी साहब काफी दुःखी हो गए थे।

सुनकर राकेश टूट चुका था। सोच रहा था क्या भारत वाकई में स्वाधीन है, एक राज्य यदि दूसरे राज्य के लोगों का ऐसे ही तिरस्कार करें, तो यह देश कैसे चलेगा? पर राजनीति की यही तो विडंबना है। आज की घटना तो एक ऐसी घटना थी जो रह रह उसे याद आ रही थी। सुबह कार्यालय जाकर उसने सारे सूपरवाइजर और कर्मचारी को काम दिया था पर किसी ने भी काम शुरू नहीं किया। पूछने पर बहस शुरू हो गई और यूनीयन के लोग आ गए । उन्होंने मिलकर सब लोगों

के सामने उसे इतना बेइज्जत किया कि वो रोने लगा था। उसे बिलख-बिलख कर रोता छोड़ सब हँसते हुए वहाँ से चले गए थे। राकेश ने तुरंत निर्णय लिया कि नौकरी छोड़ देगा। उसने अपना त्यागपत्र एम.डी साहब को दे दिया था। एम.डी साहब ने उसे समझाया कि ऐसा कदम न उठाए, धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। उन्होंने श्रम आयुक्त (लेबर कमिश्नर) और कलेक्टर से भी बात की है। शायद कुछ दिनों में हालत बदले वैसे भी अगले दिनों में तब्दीली होनी है उसके बाद कुछ ठीक हो जाए।

राकेश ने ठान ली है वो बरेली वापस चला जाएगा। घर वाले भी यही कह रहे हैं, पर एम.डी जी ने कहा "ठीक है, मैं दो दिन तुम्हारा त्यागपत्र रखे हूँ, अगर तुम न माने तो स्वीकार कर लूँगा"

एम.डी ऑफिस से वह सीधा इसी पार्क में आ गया था, जब भी वह परेशान होता था तो इसी पार्क में आ जाता था।

आखिरी दो दिन बिता कर वह चला जाएगा, पर उसका दिल भारी है। मोबाइल की घंटी बजी, फोन उठाया तो दूसरी तरफ मनोज था- उसके स्कूल एवं कॉलेज का दोस्त, " बोल मनोज, काफी दिन बाद, राकेश ने भारी मन से कहा"

राकेश ..... एक दोस्तों का ह्वाट्सएप ग्रूप बनाया है – पुराने दोस्तों का....तुझे भी रखा है, उसमें मैसेज देना" कहकर मनोज ने फोन रखा। ..... मनोज ने ..... नया ग्रूप बनाया है।

राकेश ने वक्त काटने के लिए उस ग्रूप को खोला। उसमें सारे पुराने दोस्त, जो कि 150 से भी अधिक थे, उसमें थे। नाम देखकर उसे खुशी हुई, मैसेज का सिलसिला शुरू हुआ, अनायास ही उसने अपनी पूरी परेशानी वहाँ कह दी थी। थोड़ी ही देर में, ढ़ेरों मैसेज आने लगे, सभी ने उसका साथ दिया और थोड़ी ही देर में समूह में दोस्तों के संपर्क वहाँ के कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, मजिस्ट्रेट ..... आदि से निकलने लगे। सारे दोस्त अब एक जूट थे और सभी का एक ही मकसद था- **अन्याय का विरोध**। कई दोस्तों ने अपने-अपने संपर्क को इस संबंध में बता भी दिया था और उनके रिप्लाई भी ग्रूप में पड़ने लगे थे। सिर्फ आधे घंटे में मानों उसकी दुनिया ही बदल गई थी। राकेश अब अकेला नहीं था। अब एक दल बन चुका था और सारे 150 दोस्तों ने एक दूसरे का हाथ थाम लिया था, एक साथ लड़ने के लिए।

तभी राकेश की नजर सामने दीवार पर बने एक तस्वीर पर गई; एक गोलाकार में कई लोग एक दूसरे का हाथ पकड़े खड़े थे। जिसका मतलब था- 'टीम स्प्रीट', हम साथ-साथ हैं, एकता में बल है। यकायक उसे ताकत मिल गई।

फोन की घंटी फिर बजी। फोन उठाया तो आवाज आई- "दिस पी.ए टू कलेक्टर, आर यू राकेश शर्मा", यस राकेश ने जवाब दिया। "कलेक्टर सर वान्टस टू मिट यू टूमारो ऐट 11.00" कलेक्टर के पीए ने कहा। "यस आई विल डू" कहकर राकेश ने फोन जेब में रख लिया।

उसके चेहरे पर एक मुस्कान छा गई- शायद काफी दिन के बाद वो मुस्कुराया था। उसे दोस्त और दोस्ती की ताकत का एहसास हो गया था, आज वो अकेला नहीं है। मानों हजारों हाथों ने उसे थाम लिया हो- ठीक उसी चित्र की तरह जो सामने दिख रही थी।

उसकी जिन्दगी ने मानों फिर से रफ्तार पकड़ ली हो, जो अभी तक थमी बैठी थी।

कार्यपालक निदेशक (वाणिज्य-सामग्री)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

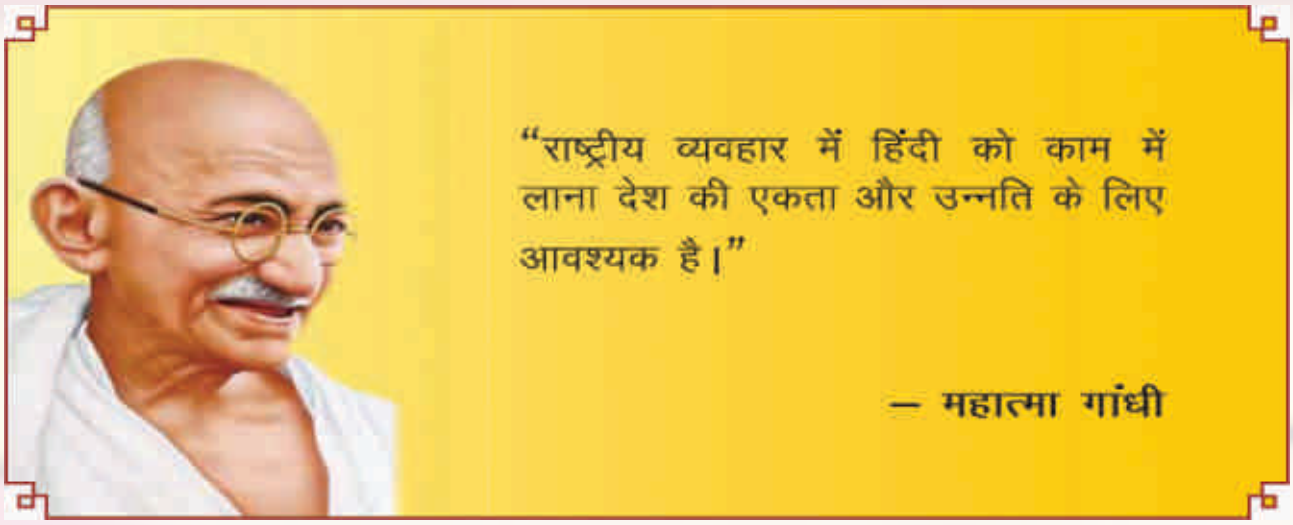

योग-विज्ञान

कामना सिंह

योग भारतीय जीवन पद्धति का एक विशिष्ट अंग है। हिन्दू एक सनातन धर्म है और सबसे पहले अपौरुषेय ग्रंथ वेद में इसका उल्लेख मिलता है। सबसे पहले भगवान शिव को आदि योगी माना गया है। ऐसा माना जाता है कि अगस्त नामक सप्त ऋषि ने पूरे भारत में योग का प्रचार और प्रसार का उत्तरदायित्व लिया था और योग का प्रचार और प्रसार पूरे भारतवर्ष में किया। योगाभ्यास का प्रमाणिक चित्रण लगभग 3000 ई0 पू0 सिंधु घाटी सभ्यता के समय की मोहरों और मूर्तियों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'यूजर' धातु से हुई है जिसका अर्थ यह है 'सम्मिलित होना'। इस एकीकरण अथवा सम्मिलित होने का अर्थ मनुष्य के व्यक्तित्व शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्षों के एकीकरण से लिया जा सकता है। योग के द्वारा मनुष्य का शरीर मन-आत्मा का एकीकरण होता है, जिससे उसकी भावनाओं का केंद्रीयकरण हो जाता है। पतंजलि के अनुसार 'योगषचित्तवृत्ति निरोध: अर्थात् 'चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है'। योग के द्वारा हम अपने पांचों इंद्रियों पर नियंत्रण पाते हैं जिससे हमारा चित्त शांत हो जाता है। वैसे तो वेदों,पुराणों , उपनिषदों और गीता में योग का वर्णन मिलता है परन्तु 200 ईसा पूर्व पतंजलि ने अपनी पुस्तक योग विद्या में सभी वेद और पुराणों में बिखरी योग विद्या का सही वर्गीकरण और वर्णन किया। पतंजलि को आधुनिक योग का जनक माना जाता है, क्योंकि इन्होंने ही योग को एक सूत्र में बाँधा और उसके प्रचार और प्रसार में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। योग और प्राचीन भारतीय संस्कृति आपस में इस प्रकार समाहित है कि उसे एक दूसरे से पृथक करना असंभव जान पड़ता है अगर हम योग को भारतीय संस्कृति के मूल दर्शन का ही एक रूप स्वीकार करें तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय दर्शन और उसके उच्च संस्कृति का मूल रूप योग हैं। यह हमें शारीरिक ,मानसिक और आध्यात्मिक सत्ता के उच्च स्तर का दिग्दर्शन कराता है। योग विश्व कल्याण ,सद्भाव व सहिष्णुता पर आधारित ज्ञान है। यह व्यक्ति को 'स्व' से 'सर्व' की ओर ले जाता है। भारतीय दर्शन के मूलरूप **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** और **'वसुधैव कुटुम्बकम'** सिद्धांत को प्रतिष्ठित करता है।योग में संसार के सभी प्राणियों के कल्याण की भावना का उद्गार होता है। योग 'सर्व-धर्म' का उपदेश देता है। यह सर्व सुख में निज सुख के अस्तित्व को दर्शाता है।

योग के आठ चरण है यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ,ध्यान और समाधि। यम और नियम मनुष्य के आचरण और विचार की शुद्धि पर आधारित है।इसमें मनुष्य को अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह धर्म का पालन करने का उच्च संदेश दिया गया है। योग दर्शन में मनुष्य के आचरण की शुद्धता पर विशेष बल दिया गया है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म में योग को काफी महत्व दिया गया है। बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय ने प्राचीन काल में योग का काफी प्रचार और प्रसार किया । ओड़िशा और बिहार उनके प्रमुख क्षेत्र रहे । इससे आगे निकल कर भक्ति काल में संत धारा की उत्पत्ति हुई । इस संत धारा में नाथपंथी प्रमुख थे जिन्होंने हठयोग की स्थापना की जिसमें प्रमुख गोरखनाथ, चौरंग आदि प्रमुख संत रहे। कालांतर में महर्षि रमण रामकृष्ण परमहंस व विवेकानंद ने राजयोग के सिद्धांत को अपनाया। भारतवर्ष में योग की विभिन्न शाखाएँ पाई जाती हैं परंतु सभी के उद्देश्य एक ही हैं सर्वोच्च शक्ति से संबंध स्थापित करना। बौद्ध धर्म के द्वारा ही दक्षिण पूर्वी एशिया में योग का प्रचार और प्रसार हुआ। बहुत कम लोगों को यह ज्ञात है कि आज चीन और जापान में जितने भी मार्शल आर्ट्स हैं, वे ध्यान और योग का सम्मिश्रण हैं, उन पर आधारित युद्ध तकनीक है।

आधुनिक जीवन में योग का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है।अगर हम यह कहें कि योग किसी धर्मविशेष से जुड़ा न होकर सभी धर्म के लोगों के लिए समान कल्याण व विकास के लिए उपयोगी है । आज सभी धर्म के लोगों ने योग को अपनाया है। योग आधुनिक जीवन के लिए वरदान है क्योंकि आज हमारी जीवन शैली अत्यंत दुष्कर होती जा रही है। हमारा जीवन तनाव, प्रदूषण और अन्य समस्याओं से युक्त है। योग हमें मानसिक शक्ति, रचनात्मक शक्ति व शारीरिक शक्ति प्रदान करता है। प्रतिदिन योगाभ्यास करने से हमारा शरीर लचीला और हड्डियाँ मजबूत बनती हैं और हमें बुढ़ापे में होने वाली हड्डियों की समस्याओं से मुक्ति प्रदान करता है। योगासनों के माध्यम से शारीरिक शक्तियों का विकास भली-भाँति होता है। योग में 84 तरह के आसन और मूलतः 12 तरह के प्राणायाम किए जाते हैं। इसमें प्राणायाम का महत्व ज्यादा होता है। प्राणायाम में अपने सांसों पर नियंत्रण रखा जाता है। सांस हमारे जीवन का मूलाधार होता है जिसके बिना हम क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकते हैं। सांसों के द्वारा हमारा पूरा शरीर संचालित होता है । जब हम अपने श्वास पर आधिपत्य स्थापित कर लेते हैं तो धीरे-धीरे हमारा मन भी वश में होने लगता है ।

योग के द्वारा शरीर में उपस्थित विभिन्न ग्रंथियों को नियंत्रित किया जा सकता है। हमारे शरीर में हार्मोंस बहुत प्रमुख भूमिका निभाते हैं इसके नियंत्रण में भी योगाभ्यास कारगर सिद्ध हुआ है। शोध के द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि गंभीर से गंभीर बीमारियाँ योग द्वारा ठीक की जा सकती हैं। पहले विदेशों में योग को मोक्ष प्राप्ति का सिर्फ साधन माना जाता था पर 20 से 25 वर्ष पूर्व से विदेशों में भी योग को काफी महत्व दिया जाने लगा है।

अभी भी योग के ऊपर काफी शोध किए जा रहे हैं और उसे अधिक से अधिक समझने की कोशिश जारी है परंतु जहाँ से विज्ञान की शक्तियाँ सीमित हो जाती है वहीं से योग की शक्ति प्रारंभ होती है। योग के अंदर अनंत शक्तियाँ समाहित हैं जो विज्ञान के समझ के परे हैं। योग के द्वारा मस्तिष्क में उपस्थित तंत्रिका तंतुओं में काफी परिवर्तन देखा गया है। योग के शांभवी मुद्रा के द्वारा मस्तिक को 150% तक विकसित किया जा सकता है और यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया जा चुका है। ध्यान अवस्था में मन-मस्तिष्क की तंत्रिका संरचनाओं और उसके क्रियाओं में कुछ ऐसे अनुकूल परिवर्तन लाए जा सकते हैं जो दवाओं से संभव नहीं है। स्वीडन की एक कंपनी ने अपने कर्मचारियों को कुंडलिनी योग सिखाने के लिए एक बड़ा कार्यक्रम चलाया था जिसमें उनके सभी कर्मचारियों को कुंडलिनी योग सिखाया जाता है । आजकल विदेशों में जगह-जगह योग प्रशिक्षक एक बड़ी संख्या में प्रशिक्षण देते हुए देखे जाते हैं। योग और ध्यान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे ऑक्सीजन धारी मुक्त रेडिकलों को बाँधने वाली एंटीऑक्सीडेंट का काम करती है जिससे मधुमेह और कैंसर जैसी बीमारियाँ ठीक करने के लिए शरीर की स्वयं उपचार क्षमता को जागृत करने के सिद्धांत के अनुसार काम होता है। विदेशों में संस्कृत पांडुलिपियों का अध्ययन किया जा रहा है और योग को अधिकाधिक समझने की कोशिश की जा रही है।

अंततः हम यही कहेंगे कि योग और विज्ञान एक दूसरे से काफी जुड़े हैं अगर हम यह कहें कि योग, विज्ञान से परे है तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। योग द्वारा हमारे अंदर बहुत सारी अलौकिक शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं जो विज्ञान के समझ से परे हैं। योग हमारी शारीरिक ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति को उन्नत बनाती है। आज हमारे आधुनिक युग के लिए योग बहुत ही आवश्यक है। मनुष्य को अनंत भौतिक सुविधाएँ प्राप्त हैं परंतु मानसिक सुख, शांति और समृद्धि योग के द्वारा ही संभव है। योग हमें पराशक्ति का अनुभव कराता है और उससे जोड़ता है। अगर हम योग और विज्ञान दोनों के परस्पर संतुलन वाले मार्ग पर अग्रसर हो तो मनुष्य अपने आध्यात्मिक और भौतिक चरम सीमा को प्राप्त कर लेगा।

अर्धांगिनीः श्री अवधेश कुमार
उप महाप्रबंधक(विपणन)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

नदी की धार...

शगुफ़्ता जबीं

परबतिया तेजी से घर की ओर भागी जा रही थी। आज वो बड़ी खुश थी। उसकी जीभ लपलपा के रह जा रही थी और मुँह में आये पानी को वो बार-बार पी जा रही थी। अब बात ही ऐसी थी। जिन माँ के यहाँ वो काम करती थी उनके यहाँ कल पार्टी थी। उफ़! क्या स्वादिष्ट व्यंजन बने थे। उनकी खुशबू ही उनके स्वाद का अहसास दिला रही थी। वैसे तो मालकिन हमेशा कुछ न कुछ देती ही थी, पर पार्टी होने से तो बहुत सारी चीजें बच जाती थीं और उसे बड़े वाले 4 खानों वाले टिफ़िन में भर के मिलती थीं। अब ऐसा हरगिज़ नही था कि मालकिन ज़रूरत से ज़्यादा बनवा लेती थी पर ये शहरी बाबू लोग तो खाना जैसे चिड़ियों के जैसे चुगते हैं। पता नहीं खाने पर इतना कंट्रोल क्यों करते हैं। जाने ये निगोड़ी डायटिंग कहाँ से आ गयी है। खैर! उसे तो उनका कम खाना अच्छा ही लगता था। कम खाते थे इसीलिए हर पार्टी के बाद वाले दिन उसके पूरे परिवार को भरपेट खाने को मिल जाता था। पर फौरन ही परबतिया ने अपने दोनों गालों को तौबा -तौबा वाले अंदाज़ में छूते हुए अपनी अंतरात्मा से माफ़ी माँगी।

चलते -चलते वो ज़रा सतर्क हो गई क्योंकि रास्ते में पड़ने वाला नाला आने वाला था। वैसे तो ये नाला कभी सूखा नहीं रहता था मगर इलाका पहाड़ी था इसलिए बरसात में वो उफान मारता था। आज बहुत बारिश हुई थी। सुबह से जो बारिश शुरू हुई तो अब दोपहर तक भी हो ही रही थी। वो एक हाथ से छाता सँभालती और दूसरे हाथ से टिफिन क्योंकि उसमें घर के सारे सदस्यों की आशाएँ बंद थीं।

परबतिया एक-एक कदम संभाल-संभाल के रख रही थी। उसे तो जल्दी थी घर पहुँचने की। बच्चों को भी पता था कि दिन बड़ा शुभ था। वे बेचैनी से माँ का इन्तज़ार कर रहे थे। वे आपस में पिछली बार के व्यंजनों की चर्चा कर रहे थे। बेटे घीसू ने बहन टिकलिया से शर्त भी लगा दी थी कि इस बार खाने की कोई न कोई नई चीज ज़रूर होगी। परबतिया भी बच्चों की आशाओं के बारे में जानती थी। बेचारों को अच्छा खाना कम ही मिलता था। बाप तो कमाता था नही। कभी-कभी मूड होता तो एकाध दिन मज़दूरी करने चला जाता और लौटते में कमाई का जश्न मनाने के लिए किसी देसी शराब के ठर्रे पर रुकता आता और बच्चों को उपहार के रूप में लात-घूँसे मिल जाते। वो तो परबतिया थी कि पास के कारख़ाने की कॉलोनी में दो-तीन घर काम कर सबका पेट पाल लेती थी।

परबतिया नाले के पास पहुँचने ही वाली थी। पर ये क्या! वहाँ तो भीड़ लगी थी। आज सुबह से होने वाली बारिश ने नाले को नदी का रूप दे दिया था। पानी किनारा तोड़ के बाहर की ओर बह रहा था । इस नए जन्मे नदी की धार बढ़ती ही जा रही थी। लोगबाग जमा होकर सभी लोगों को नाला पार न करने की सलाह दे रहे थे । ये देख कर परबतिया का दिल बैठ गया। उसकी नज़रों के सामने प्रतीक्षारत बच्चों के सूखे चेहरे घूम गए। वह मन कड़ा कर आगे बढ़ी।

"अरे! पागल हो गई है क्या ? तुझे पानी की धार नज़र नही आ रही है क्या ?? " भीड़ में से एक आदमी बोला।

"नहीं नहीं, हमरा जाए के है ...बहुत जरूरी काम है !!" परबतिया ने सपाट आवाज़ में कहा।

"अरे मरना है क्या.... पानी बहा के ले जाएगा तुझे ...?" दूसरे व्यक्ति ने खीझते हुए कहा।

" मरना तो पड़बे करी एक दिन... अबहिये से काहै डरना.....!!" वो अड़ी रही।

लोगों ने बहुत समझने बुझाने की कोशिश की मगर वो न मानी। किसी ने सही कहा है कि पेट की आग से ज़्यादा जलाने वाली चीज कोई नहीं !! इस आग से बचने के लिए व्यक्ति अपनी जान पर खेलने से भी बाज़ नहीं आता। परबतिया भी उस आग को बुझाने पानी में कूद पड़ी। उसने बाईं हाथ में मजबूती से टिफिन और दाईं हाथ में छाते को बंद करके पकड़ लिया था ताकि उसे डंडे की तरह नाले के तल पर रख-रख कर उसके सहारे चल सके। वो धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी । पानी का बहाव उसके शरीर को हिलाए दे रहा था, इरादे को नहीं। जवान होते हुए भी एक बूढ़े के जैसे

छाते रूपी डंडे के सहारे चलना उसे मंज़ूर था। वो डटी हुई चली जा रही थी कि ज़ोर के बहाव ने उसे हिला दिया। संतुलन बिगड़ने के कारण टिफिन उसके हाथ से छूटने ही वाला था कि उसने झपट कर उसे फिर पकड़ लिया जैसे शेर अपने शिकार को झपट लेता है। वह किनारे पर पहुँचने ही वाली थी कि उसने देखा एक आदमी दौड़ा चला आ रहा है और उसे चिल्ला कर कुछ कहे जा रहा है ...

"अरे जल्दी किनारे पर जा...बन्धिया के पानी छोर दिया गइल बा.... बहुते बड़ा पानी आवऽ ता...बहा के ले जाई तोहार ....!"

सुनते ही परबतिया के पैरों में जैसे चकरी लग गई। वह किनारे से ज़रा सा ही दूर थी कि तभी बहुत तेज़ी से पानी आया और उसे बहा ले चला। संतुलन खोते ही वो पानी में गिर गई और छाता उसके हाथ से छूट गया। पर टिफिन पर उसने पकड़ बनाये रखी। उसकी जान पर बन आई पर उसके लिए तो आज उसकी जान जैसे टिफिन में थी। किनारे पर लोग चिल्ला-चिल्ला कर उसे बाहर आने के उपाय बता रहे थे और वो डूबती-उतराती कुछ और उपाय लगा रही थी। तभी अचानक नाले पर गिरे एक पेड़ की टहनी उससे हाथ से टकराई और दर्द के मारे वो चीख पड़ी। पेड़ की डाल से अटक कर उसकी जान तो बच गई पर उसका सपना उसके सामने पानी में डूब गया .... एक दिन बच्चों को अच्छा भोजन खिलाने का सपना....एक शाम पेट भरने से उनके चेहरे पर आई चमक देखने का सपना ....!! वो धाड़ें मार-मारकर रोने लगी....

"बचावा.... बचावा.... हमार टिफिनवा डूब गइल.... अरे कोई तो बचावा....!!"

भीड़ में से एक आदमी चिल्लाया.....

"अरे पागल ह का रे.... जान बच गइल आउ एकरा टिफिनवा के चिन्ता सतात बा....!"

परबतिया की आँखें गंगा-जमुना बहा रही थी। उसके कलेजे में एक टीस उठ रही थी और माँ की ममता देवी माँ से गुहार लगाना चाहती थी कि हे मइया....चाहे तो हमारा भाग पलट दे या यहाँ खड़े सभी लोगों को बता दे कि हर गरीब पागल होता है....!!

अर्धांगिनीः श्री जावेद रेयाज़
समूह महाप्रबंधक (औ.अ. व अ.)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

मन करता है!

प्रियदर्शिनी सामंतराय

कभी भागती जिंदगी को थामने का मन करता है,
दूर जा चुके अपनों को याद करने का मन करता है।
कभी बैचेन दिल को मनाने का मन करता है,
बढ़ती आशाओं को तोड़ देने का मन करता है।
कभी बचपन को फिर जीने का मन करता है,
मौत से जूझते अपनों को गले लगाने का मन करता है।
कभी बच्चों के तर्क को मान जाने का मन करता है,
बड़े अधिकारी की बेतुकी बात को भूल जाने का मन करता है।
कभी गली के बेबस बच्चों को ले आने का मन करता है,
सारी दुनिया दूसरों पर लुटा देने को का मन करता है।
कभी गाँव की मिट्टी को सूँघने का मन करता है
शहर को छोड़ फिर लौट जाने का मन करता है।
बेचारा नादान दिल न जाने क्या- क्या तमन्ना करता है,
पर हकीकत-ए-जिंदगी हर सोच को मिटा दिया करता है।

अर्द्धांगिनीः श्री सदाशिव सामन्तराय
कार्यपालक निदेशक(विपणन-सामग्री)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संयुक्त परिवारःसुखी परिवार

रंजिता नायक

परिवार हर व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। भारत में प्राचीन काल से ही लोग संयुक्त परिवारों में रहते आए हैं। संयुक्त परिवार एक अविभाजित परिवार होता है जिसमें एक ही घर में एक से ज्यादा पीढ़ी साथ मिलकर रहती है। संयुक्त परिवार के अंतर्गत दादा, दादी, माता-पिता, चाचा-चाची और उनके बच्चे एक साथ रहते हैं। भारत के समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली बहुत प्राचीन समय से विद्यमान रही है। विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, जातियों में संपत्ति के अधिकार, विवाह और विवाह-विच्छेद आदि की प्रथा की दृष्टि से अनेक भेद पाए जाते हैं, किंतु फिर भी संयुक्त परिवार का आदर्श सर्वमान्य है। संयुक्त परिवार का कारण भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त प्राचीन परंपराओं तथा आदर्शों में निहित है। 'रामायण' और 'महाभारत' की गाथाओं द्वारा यह आदर्श जन-जन तक पहुँचाया गया है।

संयुक्त परिवार में सबकी शक्ति, बुद्धि और दक्षता का सदुपयोग होता है। उत्तरदायित्व का कोई लिखित आदेश नहीं होता। उसे नहीं निभाने पर दण्डविधान भी नहीं होता, किंतु सभी लोग अनायास ही अपने कर्तव्य कर्म करते चलते हैं। सास की जिम्मेदारी बहू, पिता की पुत्र उठा लेते हैं। नन्हें मुन्ने, दादा-दादी, नाना-नानी का प्यार पाते और पुष्ट होते हैं। अपने बच्चों को बुजुर्गों के आश्रय में छोड़कर माता-पिता निश्चिंत होकर धनार्जन कर सकते हैं। बच्चों की किलकारी, किशोरों के अल्हड़पन और युवाओं के संकल्प के स्वर तथा वृद्धों के परिपक्व विचारों से सारा आंगन गुंजायमान होता है। ऐसे सुख-संतोष भरे वातावरण को ही स्वर्ग की उपमा दी गयी है। न कहीं घुटन होती है न कहीं अधिकारों के लिए मारा-मारी। इस तरह संयुक्त परिवार प्रत्येक दृष्टि से सुखकर है। समाज के कई बड़े संयुक्त परिवार से मिलने पर एक बात सामने आती है कि इन परिवारों में व्यक्ति से ज्यादा अहमियत परिवार की होती है। यहाँ व्यक्तिगत पहचान कोई मुद्दा नहीं होता। परिवार में कुछ बंदिशे होती हैं, जिनका परिवार के सभी सदस्यों को अनिवार्य रूप से पालन करना पड़ता है। समाजशास्त्री मानते हैं कि बड़े संयुक्त परिवारों को सही ढंग से चलाने के लिए लोगों को खुद से ज्यादा परिवार को महत्वपूर्ण मानना पड़ता है।

सदस्यः संयुक्त परिवार में माता-पिता, भाई-बहन के अतिरिक्त चाचा, ताऊ की विवाहित संतान, अनेक विवाहित पुत्र, पौत्र आदि भी हो सकते हैं। साधारणतः पिता के जीवन में उसका पुत्र परिवार से अलग होकर स्वतंत्र गृहस्थी नहीं बसाता है। यह अभेद्य परंपरा नहीं है, कभी-कभी अपवाद भी हो सकते हैं। ऐसा भी समय आता है, जब रक्त संबंधों की निकटता के आधार पर एक संयुक्त परिवार दो या अनेक संयुक्त अथवा असंयुक्त परिवारों में विभक्त हो जाता है। असंयुक्त परिवार भी कालक्रम में संयुक्त परिवार का ही रूप ले लेता है और संयुक्त परिवार का क्रम बना रहता है। अधिकतर परिवार में तीन पीढ़ियों या कभी-कभी चार पीढ़ियों के परिवार के व्यक्ति एक ही घर में अनुशासन के साथ एक ही रसोईघर से संबंध रखते हुए सम्मिलित संपत्ति का उपयोग करते हैं और एक ही परिवार के धार्मिक कृत्यों व संस्कारों का निर्वहन करते हैं।

संयुक्त परिवार के लाभः संयुक्त परिवार में रहने वाले व्यक्ति को कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होता है और उसमें हमेशा एकता की भावना रहती है। संयुक्त परिवार के बहुत से लाभ हैं-

1. बच्चों को बड़ों और छोटों का प्यार और सहयोग मिलता है।
2. परिवार के सभी लोग घर खर्च चलाने में सहायता करते हैं जिससे जिम्मेदारी का बोझ किसी एक के कंधों पर नहीं पड़ता है।

3. किसी अकेले व्यक्ति को मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ता है। सभी लोग एक दूसरे की मुश्किल का हल निकालते हैं।

4. संयुक्त परिवार में त्योहारों का आनंद दोगुना हो जाता है।

5. संयुक्त परिवार से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अच्छा समायोजन होता है और वे एक दूसरे का सहयोग करते हैं।

संयुक्त परिवार बच्चों के विकास के लिए एक अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराता है। यहाँ पर बच्चों को मार्गदर्शन और सहभागी दोनों ही मिलते हैं। कुछ लोगों की नकारात्मक सोच और हीन भावना के करण संयुक्त परिवार का अनुशासन भंग हो जाता है। यदि सभी व्यक्ति समान रूप से घर में भागीदारी दिखाए और किसी के प्रति हीन भावना न रखे तो संयुक्त परिवार उत्तम परिवार होता है। संयुक्त परिवार में व्यक्ति को कभी कुंठा और अकेलापन जैसी बीमारी नहीं होती है। संयक्त परिवार व्यक्ति को बेहतर बनने में सहायता करता है। संगठन और सहयोग से, प्रेम एवं आत्मीयता से उपलब्ध होने वाले आनंद तथा लाभ सम्मिलित परिवारों की स्वाभाविक उपलब्धि हैं। किंतु यह अच्छाइयाँ, तभी तक बनी रहती हैं, उनके सुफल तभी तक मिलते हैं; जब तक उनके आधार कायम रहते हैं और आवश्यक नियमों का पालन किया जाता रहे। संयुक्त परिवार में सुख-शांति एवं सुव्यवस्था का आधार आत्मीयता एवं पारस्परिक सहयोग ही होता है। जिम्मेदारियों का आपसी बँटवारा सभी के सिर का बोझ उठा सकने योग्य बना देता है। सामूहिक उपार्जन से सबसे बड़ा लाभ यह है कि सम्मिलित सम्पत्ति की मात्रा अधिक होती है और हर एक को अपना अधिकार प्रतीत होने से प्रसन्नता होती है। पारिवारिक समृद्धि परिवार के प्रत्येक सदस्य को हर्ष देती है। वह जानता है कि हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति में उसका उपयोग होगा।

सबके साथ रहने का उल्लास ही अलग होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अपरिचितों के बीच पहुँचकर भी उसका दिमाग एकांत के तनाव-बोझ से हल्का होने लगता है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। परिचितों से अपने अनुभवों का संप्रेषण करने, आदान-प्रदान करने की ललक हर एक में होती है। फिर आत्मीय-स्वजनों के बीच उत्पन्न होने वाले उल्लास का क्या कहना! माँ की ममता दृष्टि, पिता का गंभीर व्यक्तित्व, भाई-बहनों का उमड़ता स्नेह, मीठी नोक-झोक, पत्नी का प्रेम तथा बच्चों की मधुर-मधुर नटखट, कौतुहल-जिज्ञासा, तुतलाहट इन सबका सम्मिलित आनंद मन को सरस-सक्रिय बनाए रखते हैं। कष्ट की स्थिति में प्राप्त सेवा-सुश्रुषा, आत्मीयता की छाया उसे सहज तथा हल्का बना देती हैं। मिल-जुलकर रहने से समाज में परिवार की साख बढ़ती है। लोग भी सम्मान करते हैं, विरोधी अहित करने की कुचेष्टा या दुःसाहस नहीं कर पाते हैं।

निष्कर्षः पिछले कई दशकों से हमारे और पारिवारिक ढ़ाँचे में बहुत परिवर्तन हुए हैं। संयुक्त परिवार के स्थान पर 'छोटा परिवार-सुखी परिवार' के नारे ने परिवार को सीमित कर दिया है। अब मनुष्य केवल अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रहकर अपनी जीवन सुखमय बनाना चाहता है। माता-पिता को बोझ समझते हुए वह उन्हें वृद्धाश्रम भेजकर अपने कर्तव्य की पूर्ति कर लेता है। इसका प्रभाव बच्चों को भोगना पड़ता है। माता-पिता दोनों के कामकाजी होने के कारण बच्चे अकेलेपन के शिकार हो रहे हैं। वह स्वयं को असुरक्षित समझते हैं तथा उन्हें दादा-दादी व नाना-नानी के प्यार से भी वंचित रहना पड़ता है। बच्चों में नैतिक शिक्षा की कमी भी दुष्परिणाम है। यदि घर में माता-पिता होंगे तो वे बच्चों का सही मार्गदर्शन करेंगे तथा उन्हें अच्छें संस्कार मिलेंगे। अतः आज फिर से संयुक्त परिवार की आवश्यकता महसूस होने लगी है, ताकि बच्चों के सुदृढ़ भविष्य की निर्माण हो सके। उनमें मिल-जुल कर रहने की भावना का विकास हो तथा बूढ़े माता-पिता भी अपनापन पा सकें। इससे बच्चे अपने उत्तरदायित्व व कर्तव्य का पालन करना सीखेंगे, यह तभी संभव होगा जब पुनः संयुक्त परिवार का निर्माण हो तथा उसे पूरे सम्मान के साथ समाज में स्थापित करें।

अर्द्धांगिनीः श्री निर्मल कुमार राउत
वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक)
एल्यूमिना परिशोधन,
दामनजोड़ी

कागजी बाँध

स्वाती तिवारी

रीगा बिहार का एक काफी पिछड़ा गाँव था। श्याम जी उस गाँव के मुखिया थे । बुजुर्ग थे और लोगों में बड़े सम्माननीय थे। यूँ तो गाँव अन्य गाँवों की तरह धीरे-धीरे ही तरक्की कर रहा था किन्तु नेपाल से सटे होने के कारण बाढ़ वहाँ की सबसे भीषण समस्या थी। अब बाढ़ के कारण वैसे ही 2 से 3 महिनों तक गाँव का सम्पर्क सारे जिले से कट जाता था । जिस कारण गाँव 2-3 महिनों तक सारे मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहता सो रहता लेकिन खेती और शिक्षा को सबसे ज्यादा नुकसान होता था।

ये बात श्याम जी को बड़ी खलती थी। पर बेचारे करें भी तो क्या करें। भारत में सरकारी अफसरों से काम निकलवाना भड़के बैल को काबू करने से भी ज्यादा मुश्किल है। पर श्याम जी भी कहाँ हार मानने वाले थे। लगभग हर दिन ही पदाधिकारियों के चक्कर लगाते। भला मेहनत कब बेकार गई है। एक दिन उन्हें बड़े साहब से मिलने का मौका मिल ही गया।

" सर नमस्ते! "

"अरे नमस्ते-नमस्ते मुखिया जी! कहिये कैसे याद किया? "

"सर हम तो याद करते ही हैं आपको, आपे का दर्शन नहीं होता। "

"अरे का बताएं हेड ऑफ़िसवा में कामे बहुत रहता है। कहिये आपका का मदद करें।"

" सर आपसे कुछो छुपा है का वही बाढ़े का बड़ा दिक्कत है। खेती बाड़ी तो चौपट होएबे करता है पर ई बचवा लोगों का पढ़ाई भी मार खा जाता है। एगो बाँध बनवा देते ऊ पुरवारि टोला तरफ तो थोड़ा राहत हो जाता मालिक।"

" हम्म्म थोड़ा भाग दौड़ वाला है पर आपका बात अब का काटे हम। जाइये हो जाएगा आपका काम।"

"ए ललन इनका काम को शिकायत वाला फाइल में लिख दो।" बड़े साहब ने अपने सेक्रेटरी जो कि गाँव का ही है, को बोला।

" जाइये चचा अब आपका काम साहब करवाइये के मानेंगे।" ललन ने दिलासा दिया।

पदाधिकारी ने 10 लाख रुपए बाँध के नाम पर निर्गत करवाया। इस बात को 3 महीने बीत गये। काम पूरे ज़ोर-शोर से चालू था लेकिन सिर्फ कागजों में।

"ए ललन काम का का हुआ। "

"अरे चचा टेनसन मत न लीजिये आपका काम पूरा ज़ोर से हो रहा है।"

कुछ समय बाद पुराने पदाधिकारी का तबादला हो गया और नये साहब आए। उन्होंने फाइल देखी और सारा माजरा समझ गए । अब भला गंगा तो बह ही रही थी बस हाथ धोने की बारी थी।

नए पदाधिकारी ने कहा "ललन ई जो बाँध बना है ना इसको थोड़ा अच्छे से सजाना है काहे कि भाई ई गाँव का शान है तो इसको थोड़ा सुन्दर तो दिखना चाहिए ना।"

"हाँ सर आप एकदम ठीके कहे हैं।"

इस नए आधिकारी ने सौंदर्यीकरण के लिये 5 लाख निर्गत किये। यकीन मानिए सौंदर्यीकरण हुआ भी लेकिन पिछली बार की तरह इस बार भी सिर्फ कागज पर।

फिर साल दर साल बीते। बाँध न सिर्फ गाँव मे बल्कि मीडिया और अखबारों में भी छाया रहा था। तारीफों के बाँध तो इस काल्पनिक बाँध से भी ज्यादा काल्पनिक थे। इधर श्याम जी और पूरे गाँव वाले परेशान थे। क्यों कि चर्चा उस बाँध की हो रही थी जो कभी बना ही नहीं।

चलिए इन साहब का भी तबादला हो गया। नए साहब जो आए उनको भी पूरा माजरा समझते देर न लगी। बाँध तो बन चुकी थी तो साहब अब क्या करें।

"ललन ई बाँध जो बना है न उससे जो लोगों का विस्थापन हुआ है न ऊ सही नहीं है। इ बाँध को हटाना होगा।"

"हाँ सर सहिये कह रहे हैं। उहाँ का लोगों का दुःख हमसे देखा नहीं जाता।"

बस फिर क्या बाँध तोड़ने का खर्च 6 लाख रुपए आया।

इन सारी घटनाओं को श्याम जी अच्छी तरह समझ गए। अगले दिन वो फिर नये साहब से मिलने गए।

"का श्याम जी का हाल है।"

"सर ठीके है। सर ऊ बाँध !!"

" देखीये श्याम जी ऊ त अब टूट गया है।"

"पर सर उसका गाँव को बहुत ज़रूरत है। "

"अरे बन जाएगा फिर से नयी जगह पर नयी तरीके से काहे टेनसन लेते हैं।"

"ठीक है सर हम जाते हैं।"

"हाँ बेफिकर होके जाइये हम हैं ना।"

श्याम जी उठ कर दरवाजे तक जाते हैं और फिर रूक कर कहते हैं सर इस बार बाँध जमीने पर बनाइयेगा काहे कि कागज पर तो मेरा पोता छोट्कू भी अच्छा बाँध बना लेता है।

अर्धांगिनीः श्री अखिल कुमार
उप प्रबंधक (प्रचालन)
प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, अनुगुळ

वो सुबह..

आयशा अहद

जब भोर में आँख हम खोलेंगे
और केवल अच्छी खबर सुनाएगी,
जब सब तरफ़ फैली खुशहाली होगी,
और धरती झूम के गाएगी,
वो सुबह कभी तो आएगी।
जब इंसान को इंसान का ना डर होगा,
और इंसानियत की फसल लह-लहाएगी,
जब कोई ना भूखा सोएगा,
और उम्मीद की रोशनी जल जाएगी,
वो सुबह कभी तो आएगी।
जब अंधविश्वास के पर्दे उठ जाएंगे,
और ज्ञान की ज्योति जगमगाएगी,
जब इन्साफ का परचम लहराएगा,
और रोती आँखें मुस्काएंगी,
वो सुबह कभी तो आएगी।
जब भ्रम का बादल छंट जाएगा,
और सत्य की अनुभूति हो जाएगी,
जब जीवन का अर्थ समझ आ जाएगा,
और कर्म की लौ जल जाएगी,
वो सुबह कभी तो आएगी।
जब दर्द दिलों के मिट जाएंगे,
और होठों पर हँसी आ जाएगी,
नफ़रत के तार सब टूटेंगे,
और प्यार की लहर बह जाएंगी,
वो सुबह कभी तो आएगी।

अर्धांगिनी – श्री मो. फ़रीद
समूह महाप्रबंधक (प्रक्रिया नियंत्रण)- प्रभारी
एल्यूमिना परिशोधन
दामनजोड़ी

रथ यात्रा का पर्व

गौतम सिंह

रथ यात्रा का पर्व भारत के प्रमुख पर्वों में से एक है और देश भर में इसे काफी आस्था तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है । भारत भर में मनाए जाने वाले महोत्सवों में जगन्नाथपुरी की रथयात्रा सबसे महत्वपूर्ण है। यह परंपरागत रथयात्रा न सिर्फ हिन्दुस्तान, बल्कि विदेशी श्रद्धालुओं के भी आकर्षण का केंद्र है। पुरी का श्री जगन्नाथ मन्दिर एक हिन्दू मन्दिर है, जो भगवान जगन्नाथ (श्रीकृष्ण) को समर्पित है। यह भारत के ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ जगत के स्वामी होता है। इनकी नगरी ही जगन्नाथपुरी या पुरी कहलाती है। जगन्नाथ मन्दिर भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में से भी एक है और यहाँ भगवान श्रीकृष्ण, बलराम और उनकी बहन देवी सुभद्रा की पूजा की जाती है। पुरी में रथ यात्रा के इस पर्व का इतिहास काफी प्राचीन है और इसकी शुरुआत गंगा राजवंश द्वारा सन् 1150 इस्वी में की गई थी। यह वह पर्व था, जो पूरे भारत भर में पुरी की रथयात्रा के नाम से काफी प्रसिद्ध हुआ। इसके साथ ही पाश्चात्य जगत में यह पहला भारतीय पर्व था, जिसके विषय में विदेशी लोगों को जानकारी प्राप्त हुई। इस त्योहार के विषय में मार्को पोलो जैसे प्रसिद्ध यात्रियों ने भी अपने वृत्तांतों में वर्णन किया है।

जगन्नाथ रथ यात्रा में होता क्या है?

भगवान जगन्नाथ उर्फ श्रीकृष्ण हर साल अपनी मौसी के घर जाते हैं। उनके साथ उनके बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा भी जाते हैं। इन तीनों की मूर्तियों को पुरी के जगन्नाथ मंदिर से रथ पर सवार किया जाता है और मौसी के घर यानी गुंडीचा मंदिर ले जाया जाता है। मान्यता है कि इस यात्रा में शामिल होना या इसका दर्शन करने के अत्यंत पुण्य लाभ होता है।

कब होती है रथयात्रा?

पूरे भारत भर में आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को रथ यात्रा का यह पर्व काफी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। यह रथयात्रा हर साल होती है। ओड़िशा का भगवान जगन्नाथ मंदिर इसका प्रमुख केंद्र है। कई और जगहों पर इस तरह की यात्राओं का आयोजन होता है। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को यात्रा शुरू होती है और शुक्ल पक्ष के 11वें दिन भगवान की घर वापसी के साथ इसका समापन किया जाता है। सामान्यत: यह यात्रा जून या जुलाई के महीने में होती है। हालांकि, इसकी तैयारियाँ कई महीने पहले से शुरू होती हैं।

क्यों खास है रथयात्रा?

पुरी की रथयात्रा विश्व प्रसिद्ध है। इस यात्रा में शामिल होने के लिए ना सिर्फ देश के विभिन्न प्रदेशों के लोग जुटते हैं बल्कि दुनियाभर के अलग-अलग देशों के लोग यात्रा में शामिल होने के लिए आते हैं। हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, जगन्नाथपुरी मुक्ति का द्वार है। कहा जाता है कि इस यात्रा में शामिल होकर रथ खींचने का अवसर मिलने पर काफी पुण्य प्राप्त होता है।

कैसे तैयार होता है रथ?

रथयात्रा की तैयारी हर साल बसंतपंचमी से ही शुरू हो जाती है। पूरा रथ नीम की लकड़ियों से तैयार किया जाता है। रथ की लकड़ियाँ स्वस्थ पेड़ों से ली जाती हैं और रथ बनाने में सिर्फ लकड़ियाँ ही इस्तेमाल की जाती हैं, कहीं कोई धातु नहीं लगाई जाती है। इस पर्व में जो सेवक शामिल होते हैं, उन्हें गरबाडू कहा जाता है।

तीनों रथों में क्या है खास?

रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ, भाई बलराम और बहन सुभद्रा तीनों अलग-अलग रथों पर सवार होते हैं। सबसे आगे बलराम, फिर बहन सुभद्रा और सबसे पीछे भगवान जगन्नाथ का रथ चलता है। जगन्नाथ जी का रथ 16 पहियों से बनता है, जिसमें 332 लकड़ी के टुकड़े इस्तेमाल होते हैं। पीले और लाल रंग का यह रथ 45 फीट ऊँचा होता है। इस रथ पर हनुमानजी और नृसिंह भगवान का प्रतीक अंकित रहता है। बलराम जी के रथ की ऊँचाई 44 फीट होती है और यह नीले

रंग का होता है। बहन सुभद्रा का रथ 43 फीट का होता है और इसमें मुख्यत: काले रंग का इस्तेमाल होता है।

यात्रा से लाभ क्या है?

हिंदू धर्म में मान्यता है कि इस रथयात्रा में भगवान के रथ को खींचने वाले को इसी जन्म से मुक्ति मिल जाती है और उसे दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता है। दुनियाभर के लोग इसीलिए रथयात्रा में शामिल होते हैं। इन रथों को रस्सों के जरिए खींचा जाता है। 10वीं शताब्दी में बना जगन्नाथ मंदिर चार धामों में शामिल है।

प्रसिद्ध रथ यात्रा स्थल

वैसे तो रथ यात्रा के कार्यक्रम देश-विदेश के कई स्थानों पर आयोजित किये जाते हैं। लेकिन इनमें से कुछ रथ यात्राएँ ऐसी हैं, जो पूरे विश्व भर में काफी प्रसिद्ध है।

1. ओड़िशा के जगन्नाथपुरी में आयोजित होने वाली रथयात्रा।
2. पश्चिम बंगाल के हुगली में आयोजित होने वाली महेश रथ यात्रा।
3. पश्चिम बंगाल के राजबलहट में आयोजित होने वाली रथ यात्रा।
4. अमेरिका के न्यू यार्क शहर में आयोजित होने वाली रथ यात्रा।

रथ यात्रा पर कोरोना का संकट

कोरोना के कारण ओड़िशा की जगन्नाथ यात्रा पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी थी। तमाम पुनर्विचार याचिकाओं पर सुनवाई के बाद अब सुप्रीम कोर्ट ने यात्रा की अनुमति दी। यह भी स्पष्ट किया गया है कि पुरी के अलावा ओड़िशा में कहीं और यात्रा नहीं निकाली। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया था कि अगर भगवान जगन्नाथ तय समय पर यात्रा के लिए नहीं निकलते हैं तो परंपराओं के अनुसार, वह 12 साल तक नहीं आ सकते हैं। यह रथयात्रा साल 1736 से लगातार जारी है। दरअसल, इस मंदिर के साथ-साथ इस यात्रा का ऐतिहासिक और धार्मिक स्तर पर काफी बड़ा महत्व होने के कारण सुप्रीम कोर्ट को इसपर सुनवाई करनी ही पड़ी। यात्रा की अनुमति के बाद भी यह स्पष्ट रहा कि इस महामारी के कारण रथयात्रा में हर साल जितनी भीड़ नहीं हुई और केवल मंदिर समिति से जुड़े लोगों को ही यात्रा में शामिल किया गया।

सहायक प्रबंधक (कंपनी सचिव)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

इंसान के रूप में भगवान

बर्नाली अधिकारी

इंसान, भगवान के सबसे सुंदर और काबिल रचना हो तुम,
तुममें वह सारी खूबियाँ हैं जो और किसी में नहीं,
तुम्हारी चेतना के रंग में धरती आज है हरी - भरी,
पर कभी क्या सोचा तुमने, भगवान ने क्यों है तुम्हें इतना काबिल बनाया?

जब मुसीबत ही मुसीबत हो, दिखाई न दे कोई रास्ता,
हम पुकारें भगवान को, और भेजे वो फरिश्ता
समस्या का हल लेकर, यों दिखाते हैं घने बादल में धूप,
वो फरिश्ता और कोई नहीं इंसान का ही है रूप।

निरंकार ईश्वर को ढूंढ़ते फिरते हैं हम मंदिर और मस्जिद में,
पर हमें नहीं दिखते चलते-फिरते ईश्वर दीन-दु:खी में,
फूल-मंत्रों से पूजकर, न मिले जो भगवान,
भूखे को खाना और बेसहारे को पनाह देकर, मिलना है उनसे आसान।

जब तुम्हारे मजबूत हाथ किसी ज़रूरतमंद का सहारा बनते हैं,
उसके मुस्कुराते हुए चेहरे भगवान की मूरत बन जाते हैं।
उससे निकली हुई चैन की साँस सुकून देती है,
इसी परोपकार से ही तो इंसान में भगवान बसते हैं।

अर्द्धांगिनी: श्री प्रशान्त मण्डल
वरिष्ठ प्रबंधक (पॉटलाइन-1 परिचालन)
प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, अनुगुळ

हमारा परिवार-हमारी ताकत

अनुराधा वी.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । कई सदियों से मनुष्य एक समाज के रूप में ही रहता आ रहा है । सदियों से चली आ रही इस सामाजिक व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण एवं पहली इकाई है परिवार। परिवार शब्द की बहुत ही सुन्दर व्याख्या भगवान विष्णु ने बालक ध्रुव को दी थी। बालक ध्रुव के पूछने पर भगवान नारायण ने कहा "परिवार हमें जीने का उद्देश्य देता है। यह बात हर समय में , हर स्थिति में पूर्ण रूप से सत्य साबित हुई है। अगर परिवार न हो तो हम किस लिए जिएँ ,किसके लिए जिएँ, क्यों कर्म करें इसलिए उपयुक्त परिवेश में शीर्षक बिलकुल सटीक बैठता है।

बच्चा हो, जवान हो या बुजुर्ग, लड़का हो या लड़की , किसी भी संकट की घडी में सबसे पहले उसका परिवार उसके मदद के लिए आता है और उसका साथ देता है। किसी भी मुसीबत के समय हमें अपने परिवार पर पूरा विश्वास रहता है कि हमें उनसे जरूर मदद मिलेगी। इसलिए इसमें कोई शक नहीं कि हमारा परिवार हमारी ताकत है ।

चूँकि परिवार में हर उम्र के लोग होते हैं इसलिए बड़े बुजुर्ग के पास हमसे ज्यादा तजुर्बा या अनुभव होता है हम उनके अनुभव का लाभ उठाकर अपने जीवन में सफल बन सकते हैं। परिवार हमें मानसिक और शारीरिक दोनों दृष्टिकोण से सक्षम बनाता है। जहाँ परिवार की शोभा परिवार की महिलाएँ होती हैं वहीं परिवार के बच्चे मनोरंजन के साधन भी होते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि परिवार के हर सदस्य एक दूसरे के लिए पूरक सिद्ध होते हैं इसलिए कोई शक नहीं कि हमारा परिवार ही हमारी ताकत है।

बच्चों के विकास का परिवार से गहरा संबंध है। एक परिवार के रूप में बच्चों को उनके जीवन में प्रथम पाठशाला प्राप्त होती है। परिवार के सदस्यों से बच्चे मानवता, दया, सेवाभाव तथा कई ऐसे गुण सीखते हैं। जिससे उनके चरित्र का निर्माण होता है। महाभारत से हमें एक अच्छा उदाहारण मिलता है जहाँ बालक अभिमन्यु माँ के गर्भ से ही चक्रव्यूह तोड़ने की कला सीख लेता है। महर्षि वाल्मीकि और माँ सीता के प्रभाव से लव-कुश बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति बन सके। लेकिन आज के परिवेश में बच्चों को पूरा प्यार नहीं मिल पा रहा है। भौतिक रूप से सफल होने की होड़ में बच्चों को या तो आवासीय विद्यालयों में रखा जा रहा है या नौकरों के अधीन में रखा जा रहा है। इससे इनके व्यवहार में चिड़चिड़ापन या नैतिक गुणों में कमी पाई जाती है। बड़े होने पर भले ही भौतिक दृष्टि से सफल हों जाएँ पर समाज और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह से निभा नहीं पाते है। अतः परिवार के लोगों का कर्तव्य है कि बच्चों के विकास के लिए ज़िम्मेदार रहे तथा उनके बचपन परिवार में बीते यह सुनिश्चित करें जिससे कि बच्चे परिवार की एकता तथा इसकी ताकत को समझ सकें।

हमारे जीवन में बुज़र्ग का भी काफी महत्व है। कोई भी व्यक्ति स्त्री या पुरुष आजीवन अपना खून-पसीना बहाकर परिवार के सदस्यों की देखभाल करता है। यह व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम क्षण में शारीरिक रूप से थक जाता है तब बाकी परिवार को उनकी सही तरह से देखभाल करनी चाहिए। विश्व के कई देशों में छात्र भारत में चल रही पारिवारिक ढाँचा तथा उसके सफल होने के कारणों का अध्ययन करते आते है। हमें हर कीमत पर पारिवारिक मूल्यों को बचाकर रखना चाहिए। विगत वर्षों में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले है जहाँ बच्चे वृद्ध माता-पिता का ख्याल नहीं रखते हैं, यह एक अच्छी प्रवृत्ति नहीं है।

सदियों से परिवार में आपसी रिश्ते में मजबूती बरकरार रखने में प्रेम और स्नेह का भी काफी भूमिका रही। यह रिश्ता आत्मीयता का रिश्ता होता है जिसे दिल से जीया जाता है। परिवार में इतनी आत्मीयता और अपनापन होता है कि एक दूसरे के दर्द को महसूस करते हैं। एक दूसरे के दुःख-सुख में शरीक होकर उन्हें सहारा देते हैं और ऐसा होना भी चाहिए इसलिए इसमे कोई शक नहीं कि हमारा परिवार ही हमारी ताकत है ।

बड़ों के प्रति आदर और सम्मान परिवार ताकतवर होने का

एक और पहलु है। हम बड़ों का आदर सत्कार करते हैं। बड़ों का आदर करना सबसे जरूरी है क्योंकि जीवन में कोई भी इंसान अपने व्यवहार से पहचाना जाता है । बड़े व्यक्ति जो हमारे माँ-पिता, चाचा-चाची, नाना-नानी, भैया, शिक्षक इन सबका आदर सम्मान करने से हमें जीवन की ऊँचाई को छूने में सफलता मिलेगी इसलिए हमेशा बड़ों का सम्मान करना चाहिए।

मेरा परिवार मेरी ताकत है। और इसके आधार हैं – मेरे माता-पिता। मेरे माता-पिताजी दोनों ही सेहतमंद है और यह हमारे लिए एक वरदान है। आज हम जिस कामयाबी पर खड़े हैं, यह उनकी देन है और इसमें उन दोनों की काफी भूमिका रही है। मेरे पिताजी मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं। वे मुझे हर अच्छा काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं । अपने परिवार पर मुझे मेरा गर्व है।

ऐसा भी कहा जाता है कि एक अच्छे परिवार के गठन से ,एक अच्छा समाज बनता है और अच्छे समाज से ही एक राष्ट्र का निर्माण होता है।

अंत मे मैं महान कवि शाद उदयपुरी की एक दिल को छू लेनी वाली काव्य रचना प्रस्तुत कर रही हूँ। जो मेरे विचार को पुख्ता करती हैं।

ना मंजिल है कोई ना कोई कारवाँ
बढ़े चले जा रहें है , रुकेंगे कहाँ

कुछ पल बचा लो अपनों के लिए
जो देखोगे पलट के , ये मिलेंगे कहाँ

वक्त का तकाजा कहता है यही
जो बीत गये पल , फिर आएंगे कहाँ

आओ इस पल को यादगार बना लें
जो बातें होंगीं अभी , फिर करेंगें कहाँ

हम भागते रहे माया के लिए हर जगह
सुख जो परिवार में है , वो मिलेगा कहाँ।

कार्यपालक सहायक (प्रशासन विभाग)
पत्तन सुविधाएँ, विशाखापट्टणम

मुझे मिला वही जो मेरा था!

सुनील कुमार

क्या लिया किसी से?
क्या दिया किसी को?
बस सोच-समझ का फेरा था,
मुझे मिला वही जो मेरा था।

क्या पाया! जिसकी आशा थी,
क्या मिला नहीं जो चाहा था?
क्या पास मेरे जो मेरा है?
क्या छूट गया जो तेरा था!
मुझे मिला वही जो मेरा था।

बचपन से देखा है मैंने,
सब आते हैं और जाते हैं!
कोई रहता नहीं है साथ सदा,

वही वक़्त मिला जो तेरा था,
मुझे मिला वही जो मेरा था।

कभी चाहा और पा लिया उसे
कभी मुद्दतों वो मिला नहीं,
कभी वक़्त कभी बेवक्त मिली,
तुझे मिला वही जो तेरा था,
मुझे मिला वही जो मेरा था,

हर चीज़ मेरे अनुसार चले
हर बार मेरी ही बात रहे,
हर चीज़ जहाँ की मिले मुझे,
अंदर अहंकार का डेरा था!
मुझे मिला वही जो मेरा था।

वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

आप कहाँ से हैं?

धीरज कुमार मिश्र

संस्थान में नियुक्ति के पश्चात स्वाभाविकतः औपचारिक और अनौपचारिक रूप से परिचय के दौरान कमोबेश दूसरा वाक्य यही होता है कि आप कहाँ से हैं? जब मुझसे यह पूछा गया तब मुझे अनायास ही भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली द्वारा नई दिल्ली में आयोजित नवंबर माह में पाँच दिवसीय उच्च अनुवाद प्रशिक्षण के उस सत्र की ओर ध्यान चला गया जिसमें सभी प्रतिभागियों से उनका परिचय पूछा जा रहा था। परिचय के दौरान एक प्रतिभागी से यह पूछे जाने पर कि वह कहाँ से हैं, वह असहज हो गए और कुछ बोल न पाये। उनसे जब पुनः इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने अपनी विडम्बना बताते हुए कहा कि "मेरा जन्म ओड़िशा में हुआ जबकि पिताजी के स्थानांतरण वाली सेवा के चलते कभी बिहार, कभी असम तो कभी किसी अन्य राज्य में बचपन और किशोरावस्था बीता जबकि मैं खुद केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में कार्यरत हूँ और देश के विभिन्न स्थानों पर मेरी तैनाती होती रही है। मैं एक स्थान पर कभी स्थायी रूप से नहीं रह पाया। ऐसे में जब भी मुझसे यह पूछा जाता है कि मैं कहाँ से हूँ तो मै असमंजस में पड़ जाता हूँ। आखिर मैं क्या कहूँ।"

श्री एस एन सिंह, जो निदेशक के पद पर थे, उन्होंने इस मर्मस्पर्शी वृतांत को आज की मध्यवर्गीय चुनौतियों में से एक माना। उन्होंने कहा कि हम किसी- न- किसी रूप में चाहे वह आजीविका के लिए हो अथवा शिक्षा अथवा किसी अन्य प्रयोजनवश हम निरंतर पलायन कर रहे हैं। हम अपनी ज़मीन, अपने खेत-खलिहान, अपना आँगन, अपने मित्र, अपना संसार छोड़ रहे हैं। यह लगभग हर मध्य-युगीन परिवार की कहानी है। इससे कोई अछूता नहीं है। यह एक अर्थ और समाज से जुड़े होने के बावजूद अत्यंत भावनात्मक भी है जिसमें न जाने कितने अरमान हर पल दफन होते हैं। हम अपने ईया-बाबा, माँ-बाबुजी, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री, पत्नी और उस पूरी संस्कृति से दूर हो जाते हैं जिनमें हमारी परवरिश हुई है और न जाने कितने नाते रिश्तेदार जिन्होंने हमें डाँटा भी और दुलारा भी। इन सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्थाओं के स्नेहिल से दूर होकर हम चाहे भौतिक रूप से कितने भी समृद्ध क्यों न हो जाएँ किन्तु अन्तः भाग में खालीपन का टूटन हमें तथाकथित सम्पन्न भी नहीं बने रहने देगा इसलिए जहाँ तक हमारे होने का प्रश्न है वह वही है जहाँ हमारा जन्म हुआ है। वही हमारी धरती है। वही हमारी जगह है जहाँ हमारी माँ ने हमें अपने सीने से लगाकर दूध पिलाया। निःसंदेह हमारी वास्तविक पहचान वही है। हम वहीं के हैं।

यद्यपि श्री सिंह ने जिस पलायन (वाद) का संकेत करते हुए इसे मर्मस्पर्शी बताया है। आखिर यह पलायन है क्या? और यह क्यों होता है? पलायन का सरल अर्थ है किसी आपदा, अत्याचार अथवा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। इस क्रिया में दुःख भले एक जैसा सभी अवस्थाओं में न रहे पर विवशता और बिछड़ाव की सिहरन सदैव रहती है। अभी हाल ही में कोरोना महामारी और शहरों की तालाबंदी में हजारों की संख्या में लोगों का शहरों से गाँव का पलायन इसका ज्वलंत उदाहरण है। रोजी रोटी के साधन बंद हो जाने से जीवन पर संकट आते देख लोगों ने अपने-अपने गाँव का रुख कर दिया। यह जानते हुए भी कि जहाँ वह लौट रहे हैं वहाँ भी स्थिति भयावह है किन्तु अपनी जन्मभूमि का वात्सल्य उन्हें यह भरोसा देता है कि उन्हें वहाँ कुछ नहीं होगा। ऐसी विषम परिस्थिति में भी अपने गाँव के प्रति अपनत्व और अटूट विश्वास आज भी बहुत कुछ संदेश दे जाता है। कुछ लोग अध्ययन के लिए, कुछ लोग भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए पलायन करते हैं। आम तौर पर शायद उनका दुःख इतना बड़ा नहीं माना जाता क्योंकि इसमें अर्थ की तलाश नहीं माया और भावना का वास होता है जो हर चिंतन में गहरे भावबोध में विद्यमान होता है।

बहरहाल मेरा जन्म बिहार के गोपालगंज जिले के धर्मगता नामक गाँव में हुआ। जब मैं लगभग 9-10 वर्ष का था तो पढ़ने के लिए बड़े भैया-बड़ी भाभी के पास दिल्ली आ गया। बचपन, प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा से लेकर उच्च शिक्षा भी मैंने दिल्ली से ही प्राप्त की। वहीं मेरा घर है। वही मेरी दुनिया है और वही मेरा स्थायी पता भी है जो सरकारी अभिलेख में दर्ज है। पर क्या वास्तव में यही मेरा परिचय है या कुछ और? शायद है तभी तो मैं अपने परिचय में दिल्ली का कहने के साथ ही अपनी जन्मभूमि को बताना और यह जताना कि मेरा जुड़ाव यहाँ से है, सदैव मेरी प्राथमिकता रहती है। दरअसल यह किसी सोच या वाद से नहीं बल्कि यह उत्कट भावना है जिसकी प्रतीति होने पर सहसा स्वयं पर भरोसा नहीं होता कि जब आपका परिचय पूछा जाता है तो न जाने कौन-कौन

से तार जुड़ते चले जाते हैं जैसे हम सब कुछ साझा कर दें जिसमें हम स्वयं जीते हैं। महसूस करते हैं। पर उतना सोचना, जितना हम खुद सोचते हैं! खुद को बता पाना क्या उचित है या संभव भी है! शायद नहीं। क्योंकि जो हम सोचते हैं, उसमें जीवन के एक-एक क्षण को समेटने की जद्दोजहद होती है। उसमें इस प्रकार के सवाल जो पहचान और शख़्शियत से जुड़ा हो; अचानक से सब-कुछ बता देना कदाचित सहज नहीं है।

समस्या का समाधान तो निश्चित रूप से यह हो गया, किन्तु खुद को भरोसे में लेना सरल नहीं है। यह बताने के बाद कि आप कहाँ से हैं दूसरे को तो उसके सवाल का जवाब मिला जाता है पर जो इस उधेड़बुन में रहकर जवाब देता है उसे खुद को जवाब देना आसान नहीं होता क्योंकि भावनाएँ जिस धरातल से टकराती हैं वो जिगर भला किसके पास है। टूटन यहाँ भी है और शायद गहरे रूप में, क्योंकि जिस बुनियाद के सहारे अपनी छत और पीठ मज़बूत हुआ करती थी अब वो भी जाती रही है। गाँव में लोग अब अपना-अपना समझने लगे हैं। वे अब हमें बाहरवासी मनाने लगे हैं। इसलिए अब अपने-अपने हिस्से की बात होने लगी है जिसमें उनके हिस्से पर अपनी हरारत दूर करना तो दूर की कौड़ी रही, अपने पुरुखों की संपत्ति से भी निष्कासित किया जा रहा है। यह कह कर कि जो उस ज़मीन पर है या जिसके कब्जे में ज़मीन है अब वही वहाँ का है। वो नहीं जो बाहर रहता है और मेहमानों की भांति अपने घर/गाँव में आता है।

स्वाधीन भारत में विस्थापन का दंश जिन्होंने झेला है शायद उन्होंने अपने को पुनर्जीवित मानकर जीया है अथवा जी रहे हैं अन्यथा माटी को माँ की संज्ञा नहीं दी जाती। पलायन और विस्थापन की प्रक्रिया की अपनी स्थिति है जिसमें हर वाद अपना मुँह छिपाए फिरता है। वहीं समाज में नैतिक मूल्यों के क्षय भी सामने आते हैं जो दु:खद है। निःसंदेह कोई समाज स्वयं को विकसित/अग्रणी कहता है तो उसमें पलायन नहीं होना चाहिए। पलायन के लिए हर वर्ग उत्तरदायी है। बल्कि कहना तो यह समीचीन होगा कि हर वर्ग अपने को उत्तरदायी माने। क्योंकि समाज की संरचना और उसकी बुनियाद किसी एक पहलू से नहीं बनती बिगड़ती। शासन अगर समाज को भौतिक रूप से जोड़ते हुए अवसंरचनात्मक प्रगति के क्रम में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करता है और नागरिकों के बेहतर जीवन के लिए हर संभव कोशिश करता है तो हमें भी चाहिए कि हम एक दूसरे के दुख दर्द में साथ हों। नैतिक मूल्यों से ज्ञानवर्धन करें, और एक नागरिक के कर्तव्यों का समुचित प्रकार से निर्वहन करें तो ऐसी स्थिति ही उत्पन्न न हो कि मामूली सहयोग के बिना कोई व्यक्ति स्थान और परिवेश छोड़ने पर विवश हो जाए। एकजुटता, प्रेम और सद्भाव हो तो समाज सुंदर लगता है। ऐसे में समय विपरीत होने पर भी सबका साथ बड़ा बल देता है।

एक सचेत व जागरूक नागरिक अपने कर्तव्यों और अधिकारों का समुचित अनुपालन करे तो समाज में बहुत हद पलायन को समाप्त किया जा सकता है। शिक्षण और स्वास्थ्य से संबन्धित सभी नागरिक अपने होने के अर्थ को सिद्ध करें। उनका कर्म ही धर्म है। जन प्रतिनिध जनता की आकांक्षाओं और उम्मीदों पर खरा उतरने की पुरजोर कोशिश करें, जो संभव न हो उचित मंच पर ले जाएँ, जनता की समस्या और जरूरतों को पूरा करने के लिए कदम उठाएँ। व्यापारी अवैधानिक/ अनैतिक ढंगे से धन न कमाएँ। सही मूल्य पर वस्तुएँ बेचें, कालाबाजारी/ अवैध भंडारण न करें न करने दें, प्रशासन से जुड़े सभी कार्मिक समाज की प्रगति प्रवाह को अपने अपने स्तर से क्रियान्वित करें, कानून व्यवस्था पूर्णतः कायम हो, सभी को सुरक्षित जीवन मिले, आत्मनिर्भर बनें और दूसरे को भी आत्मनिर्भरता की प्रेरणा दें, तो स्थान परिवर्तन के बारे में किसी के मन में विचार आए भी क्यों? क्यों हम कहीं और जाएँ और कहीं जाना भी क्यों है? यह सामान्य लगने वाली बिन्दुएँ पलायन को रोकने में मील का पत्थर साबित हो सकती हैं। किसी भी राष्ट्र की इतनी व्यापक संसाधनात्मक क्षमता नहीं हो सकती कि वह महामारी से प्रभावित न हो तथा पलायन न हो किन्तु आम जन की भागीदारी और एक दूसरे के प्रति निष्ठा और साथ से यह निश्चित रूप से संभव है। विगत कुछ माह में हमने इस अनुभव को जीया भी है।

वर्तमान समय की विभीषिका ने व्यक्ति को पुनः आत्म-मंथन के लिए अवसर प्रदान किया है कि आखिर उसे क्या चाहिए? ऐसा कौन सा सुख है जिसके मिल जाने पर तृष्णा खत्म हो जाएगी और उस वस्तु की मियाद कितनी है? क्या वैमनस्य, कटुता के लिए अब भी कुछ शेष है ? क्या अब भी हम अपने को अंधेरे में रखकर झुठलाते रहेंगे? क्या अब भी हम छोटे-बड़े, अमीर- गरीब को उसकी तथाकथित हैसियत से उसको परखेंगे? नहीं न! तो फिर ये दुर्भावना कैसी ? हम सब एक ही तो हैं। माना भौतिक रूप से स्थितियों ने अपना घर छोड़ने पर विवश किया, इसके लिए पूरी व्यवस्था जिम्मेदार है। अथवा इसको सुखद रूप में देखें तो किसी का ठौर वहीं हो। किसी की राष्ट्र सेवा, समाज सेवा के लिए उसे राष्ट्र और समय ने उसे चुना हो, ऐसे में उसके लौटने पर उसी गर्मजोशी और अपनत्व के साथ व्यवहार करना कितना सुखद हो। किसी भी कारण से हम अपने स्थान से अपनों से भले दूर हों, हमें दर्द में याद अपनों की ही तो आती है। उसका रिश्ता इस जन्म में कहाँ टूटना है! अगर यह भाव हर समय कोई अपनी पहचान में कि 'वह कहाँ से है' में रखता/जीता है तो निःसंदेह व अपनी माटी का ही कहा जाएगा और माटी को भी चाहिए कि जब उसका लाल उसके कदम चूमें तो वह उसपर गर्व कर सकें।

सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
खान एवं परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** **4.** क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.** ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **55%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)
	(**ii**) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)	**25% (**न्यूनतम)
	(**iii**) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**40%**	**30%** (न्यूनतम अनुभाग)	**20%**
सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।				

राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सचिव (राजभाषा) महोदय के 12 "प्र" की रूपरेखा

- प्रेरणा
- प्रोत्साहन
- प्रेम
- प्राइज़ अर्थात पुरस्कार
- प्रशिक्षण
- प्रयोग
- प्रचार
- प्रसार
- प्रबंधन
- प्रमोशन (पदोन्नति)
- प्रतिबद्धता
- प्रयास

रूपरेखा से संबंधित **'रणनीति'** के लिए कृपया दिये गए लिंक का प्रयोग करें- https://rajbhasha.gov.in/hi/annual-programme-and-reports

नालको, निगम कार्यालय द्वारा नराकास (उ) सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता।

विश्व हिंदी दिवस 2021 के आयोजन के दौरान पश्चिमी कार्यालय (मुंबई) के अधिकारी-गण।

विश्व हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर पत्तन सुविधाएँ, विशाखापट्टणम में विजेता को
पुरस्कृत करते हुए स.म.प्र. श्री के.वी.नारायण मूर्ति।

खान व परिशोधन संकुल दामनजोड़ी में विश्व हिंदी दिवस 2021 के आयोजन के दौरान वरिष्ठ अधिकारी गण।

नालको NALCO
एक नवरत्न केंद्रीय लोक उद्यम
भारतीय सार
वैश्विक प्रसार
पवन ऊर्जा
एल्युमिना परिशोधक
एल्युमिनियम प्रद्रावक
बॉक्साइट खान
सौर विद्युत
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
पत्तन सुविधाएँ
बेल्लित उत्पाद
एशिया में वृहत्तम एकीकृत एल्युमिना और एल्युमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्युमिना परिशोधन, एल्युमिनियम प्रद्रावण, विद्युत सृजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक की समग्र मूल्य शृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं ।
▲ विश्व में एल्युमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
▲ विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
▲ तीसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम
नालको वेबसाइट
नालको ट्विटर
@NALCO_India
@CMDNalco
fb.com/nalcoindia
www.nalcoindia.com